

॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

श्रीमद्गोस्वामी श्रीमट्टुलालजी–श्रीगोपीका-

लंकारजी महाराज कृत.

३२ वचनामृत

तथा

महाराजश्रीए श्रीद्वारकामां करेलां छप्पनभोगनुं धोळ.



Reg. No. 118

श्रीकृष्णाब्द ५१४५. श्रीवल्लभाब्द ४४२

संवत् १९७७. आवृत्ति पहेली. प्रत १०००

छपावी प्रसिद्ध करनार.

लल्लुभाई छगनलाल देसाई.

व्यवस्थापक "श्रीभक्तिग्रन्थमाळा" कार्यालय

चंगपोळ, खंत्रीपोळ
ऑफिस–नं. ११०, रीचीरोड } अमदावाद.

न्योच्छावर ०–६–०



6-839

127

અમારા તરફથી પ્રકટ થએલાં પુસ્તકો.

૧	વિવિધ ધોળ તથા પદ સંગ્રહ ભાગ ૧ લો	૧—૪—૦
૨	વિવિધ ધોળ તથા પદ સંગ્રહ ભાગ ૨ જો.	૧—૦—૦
૩	નિત્યનિયમના પાઠ તથા ધોળ (આવૃત્તિ ૪ થી)	૦—૪—૦
૪	શ્રીગોકુલનાથજીનાં ૨૪ વચનામૃત. (ગુજરાતી)	૦—૪—૦
૫	બ્રહ્મસંબંધ-નિર્ણય (આવૃત્તિ ૨ જી)	૦—૬—૦
૬	શ્રીગોકુલેશજીનાં ધોળ તથા પદ સંગ્રહ.	૧—૦—૦
૭	શ્રીકૃષ્ણસ્તોત્ર રત્નાકર (મુળ શ્લોક સાથે ગુ. ટીકા)	૦—૧૨—૦
૮	૮૪ વૈષ્ણવની વાર્તા.(ગુજરાતી ભાષામાં મોટા અક્ષરથી)	૨—૮—૦
૯	શ્રીસર્વોત્તમ સ્તોત્ર.	
૧૦	શ્રીપુરુષોત્તમ સહસ્ર નામ સ્તોત્ર. (મુળ શ્લોક સાથે ગુજરાતી ટીકા.)	૧—૪—૦
૧૧	શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતા. [તત્વદિપિકા, અમૃત તરંગીણીના આશય સાથે]	૧—૮—૦
૧૨	શ્રી યમુના સ્તોત્ર રત્નાકર.	૦—૮—૦
૧૩	શ્રી સ્વરૂપદર્શન-(૧૦૪ ફોટાવાળું)	૩—૦—૦
૧૪	શ્રીગોવર્ધનનાથજીનું પ્રાગટ્ય.	૦—૬—
૧૫	શ્રીષોડશ ગ્રન્થો-સરળ ગુજરાતી ટીકા.	૧—૪—
૧૬	કીર્તન સંગ્રહ ભા. ૧ લો વર્ષોત્સવ કે કીર્તન. (ઘણા મોટા અક્ષરથી)	૧૦—૦—
૧૭	શ્રીગુસાંઇજી કૃત વિજ્ઞપ્તી.	૦—૫—૦
૧૮	શ્રીગોકુલનાથજીનાં ૨૪ વચનામૃત વ્રજભાષામાં	૦—૫—૦
૧૯	શ્રીવલ્લભાખ્યાન મુળ પુરૂષ ગુજરાતી ૦—૧—૦, વ્રજભાષા	૦—૨—૦
૨૦	શ્રીયમુનાજીનાં ૪૦ પદ. (વ્રજભાષા)	૦—૨—૦
૨૧	વનયાત્રાનું ધોળ.	૦—૧—૩
૨૨	શ્રીમદ્જી મહારાજ કૃત ૩૨ વચનામૃત (વ્રજભાષા.)	૦—૬—૦
૨૩	શ્રી ગિરિરાજભૂષણ ગ્રન્થ સટીક.	૦—૧૦—૦
૨૪	નિત્યનિયમના ૨૪ પાઠ. (મૂળ સંસ્કૃત).	૦—૬—૦

श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥
॥ श्रीमन्मदनमोहनो जयति ॥ श्रीमदाचार्य चरणकमलभ्यो नमः ॥



॥ अथ श्रीमट्टुलालजी-श्रीगोपीकालंकारजी महाराज कृत ॥

२९ । ५ । ८

॥ मंगलाचरणम् ॥

द्रापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
द्वासः कनक कपिशं वैजयन्तींच मालाम् ।
ान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दैः
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥ १ ॥
श्रीगोवर्धननाथपादयुगलं हैयंगवीनाप्रियं ।
नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं श्रीविठ्ठलेशं मुदा ॥
श्रीमद्द्वारवतीशगोकुलपती श्रीगोकुलेंदुं विभुं ।
श्रीमन्मन्मथमोहनं नटवरं श्रीबालकृष्णं भजेत् ॥२॥

चिंतासंतानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः ॥
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ ३ ॥
यदनुग्रहतो जंतुःसर्वदुःखातिगो भवेत् ॥
तमहं सर्वदा वंदे श्रीमद्वल्लभनंदनम् ॥ ४ ॥
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ॥
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥
नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् ॥
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥६॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा ॥
षड्भिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये मम ॥ ७ ॥
सायं कुञ्जालयस्थासनमुपविलसत्स्वर्ण पात्रं सुधौतं ॥
राजद्यज्ञोपवीतं परितनु वसनं गौरमम्भोजवक्त्रम् ॥८॥
प्राणानायम्य नासापुटनिहितकरं कर्णराजद्विमुक्तं ॥
वन्देऽर्धोन्मीलिताक्षं मृगमदतिलकं विठ्ठलेशंसुकेशम्॥९॥
श्रीमद्गिरिधरगोविंदबालकृष्णाख्यवल्लभान् ॥
रघुयदुकुलाधीशौ घनश्यामान्नमाम्यहं ॥ १० ॥

वचनामृत १ लो.

हवे अेक दिवसे कह्युं के पहेलां दत्तात्रयअे पृथ्वीने गुरु करीने तेनो गुण लीधो ते पृथ्वीमां केवो गुण छे, ते बहु दुःख सहन करे छे, काइ तो पृथ्वीने खोदे छे, कोइ तेना उपर दुर्गंध नाखे छे, कोइ तेने ठीक करे छे, वली कोइ तेना उपर हरिमंदिर बनावे छे; पण पृथ्वी कोइना उपर रीस करती नथी. माटे अेवो गुण वैष्णवे राखवो. १

वळी दत्तात्रयअे झाडने गुरु कर्यो, ते झाडनो अेवो गुण छे के झाड टाढ सहन करे छे, तडको वेठे छे, वरसाद वेठे छे पण जो कोइ तेनी पासे आवे छे तो तेने सुख करे छे वळी जो कोइ तेने कापे तो पण बोले नही. माटे वैष्णवे पण अेवो गुण राखवो. २

वळी दत्तात्रयअे अजगरने गुरु कीधो, तेनो गुण लीधो ते अजगरनो अेवो गुण छे के पोताना उदर अर्थे कांइ पण उद्यम करवो नही जे कांइ भगवद

इच्छाअे प्राप्त थाय ते खरुं. तो वैष्णवे अेवो संतोष राखवो अने पोतानुं चित्त भगवान् विषे राखवुं. ३

वळी दत्तात्रयअे समुद्रने गुरु करी तेनो लक्ष लीधो. ते समुद्रनो अेवो गुण छे के सदाकाळ प्रसन्न रहे छे, ने सदा आनंदनी लहरो उठे छे. वळी उष्णकाळमां घटे नहीं ने वर्षाकाळमां वधे नहीं. सदाकाळ अेक पूर्ण रहे. तो भगवदीयने सदाकाळ आनंदयुक्त रेहवुं. वळी लाभ थये हर्ष न करवो, अने हानी थयेथी शोक न करवो. अे रीते सदा निर्लोभी रहे. वळी पोताना मनमां अेम जाणे जे भगवान करशे ते खरुं. वळी मनमां कंइ पण संकल्प विकल्प करे नहीं, सदाकाळ प्रसन्न रहे, अने विचार मात्र भगवतमां राखे, तथा चित्त भगवत स्वरूपमां राखे, अेवो गुण समुद्रनो लीधो. ४

वळी दत्तात्रय ए भमरीने गुरु करी तेनो लक्ष लीधो. ते जेम भमरो सर्व पुष्प उपर बेसे छे ते क्यांय

बंधन पामतो नथी तो भगवदीयने पण कथा मात्रनो सार ग्रहण करवो. माटे जे सार ग्रहण करे ते पार पडे. वळी भगवदीयने कोइनो संग करवो नहीं जो संग करेतो बंधन थाय. जेम भमरो कमळनो संग करे छे तो बंधन पामे छे माटे जो संग करे तो लोभ थाय छे.

वळी भमरीनुं दृष्टांतः—जेम मधमाखी सर्वे वनस्पतीमांथी रस लावीने मधपुडो करे छे, त्यारे पाराधी आवीने तेनी नीचे धुमाडो करे छे ने माखीओने उराडी मूके छे. पछी ते मधनो सर्वे रस लइ जाय छे. तेम जो द्रव्यनो संग्रह करीए तो नाश थाय. माटे लोभ करीने कोइ वस्तुनो संग्रह करवो नहीं. ५

वळी हाथीनुं दृष्टांतः—जेम कोइ कागळनी हाथणी करीने एक खाडो खोदी ते खाडाने ढांके छे पछी तेना उपर पेली कागळनी हाथणी उभी राखे छे तेने देखीने हाथी कामातुर थइने दोडे छे पछी ते खाडामां पडे छे एटले हाथीने पगे बांधीने खाडामांथी बहार

काढे छे. एम जाणीने भगवदीयने काष्टनी पुतळीनो पण संग करवो नही. जो संग करे तो हाथीनी पेठे बंधन पामे. ६

वळी पींगला वेश्यानुं द्रष्टांतः—पींगला एक दीवसे रात्रीने विषे शणगार सजीने द्रव्यना लोभे करीने परपुरुषनी वाट जोती हती. ते वाट जोतां जोतां आखी रात्रीमां कोइ परपुरुषनी प्राप्ती थइ नही. पछी ते निराश थइने सुती त्यारे तेने ज्ञान उत्पन्न थयुं तेथी ते एम कहेवा लागी के अरे! आ मने शुं सुज्युं! आतो सर्व खोटुं छे! साचा तो एक श्रीहरी छे! माटे हवे हुं एनुं आराधन करुं तो मारुं कल्याण थाय. एवी रीत घणो विरह ताप करीने भगवानमां चित्त लगाडीने सुती पछी ते भगवद्गतीने पामी तेम वैष्णवने पण सर्व प्राणीमात्रमांथी चित्त काढीने भगवानमां चित्त लगाडवुं तथा प्रभुनो द्रढ आश्रय करवो तेथी भगवद प्राप्ती थाय माटे कोइ वातनी अपेक्षा करवी

नहि. एम जाणवुं जे हरि विना सर्वे खोटुं छे एवी रीते जेनुं मन द्रढ थाय त्यारे ते हरिने पामे छे. (७)

वळी मच्छनुं द्रष्टान्तः—जेमके मांछली जीव्हा इंद्रीयना लोभ करीने मृत्युने पामे छे. तेम जे पुरुष जीव्हा इंद्रीयनो लोभ करे ते नाश पामे छे. माटे जे कोई काम, क्रोध, लोभनो त्याग करशे ते हरिने पामशे. वळी कोई वस्तुनो संग्रह करवो नहि. अने भगवदीय कालनो विचार करवो नहि. केवल पोतानुं साधन विचारवुं. वळी आपणो विचार कोई काम आवतो नथी. धार्युं तो श्रीनाथजीनुं थाशे. त्यारे आपण शुं विचार करवो? वळी भगवदीए तो सार मात्र ग्रहण करवो. ते कानी पेठे. जेमके—डांगरमांथी चोखा काढी फोतरां नाखी दे छे, बोरनी छाल ग्रहण करी ठळीओ नांखी दे छे तेम भगवदीए सार मात्र ग्रहण करवो.

हवे नारदजी प्रचेताने कहे छे हे ऋषि! तमे कहो छो के आ देह जेवां कर्म करे छे तेवां बीजे जन्मे भो-

गवे छे, पण ज्यारे आ देह पडे छे त्यारे देह तो अहिं रहे छे तो ए कर्म कोण भोगवे छे ? त्यारे प्रचेताए कह्युं के आ देह छे ते कांइ कर्म भोगवतो नथी पण एनी वासनारुपी जे शरीर छे ते अखंड छे ते ज्यां जाय त्यां वासना पामे छे ते कर्म भोगवे छे. अने जेनी वासना मरी गइ छे तेने कांइ कर्म भोगववुं पडतुं नथी. हवे वासना ते शुं ? त्यां कहे छे, आ जीव एम माने छे के आ में कर्युं, वळी आ पति, ग्रह में कर्यों वळी कहे छे के म्हें पोतापणुं मूकी दीधुं. वळी कहे छे के हुं ब्राह्मण छुं. हुं क्षत्री छुं, हुं वाणीओ छुं, हुं कणबी ए रीते जे बोले छे ते सर्वे मनथी माने छे जे आ कर्म में कर्युं. ए रीते जे सारुं–नरखुं मनथी माने छे. ते वासना एना मनमां बेठी छे तेथी एम कहे छे. ते पोते ज्यां जाय छे त्यां ते वासना तेनी पासे छे. ते वासनाने ज्यारे जोग आवे छे त्यारे ते भोगवे छे. अने जेनी वासना बळी जाय छे त्यारे ते हुं करता

मानतो नथी पछी तो ते एम माने छे, के हुं लेनार नथी, हुं आपनार नथी, हुं करनार नथी, तो अेवी रीते जे मानी रह्यो छे तेने पाछुं कर्मबंधन थाय नहीं. माटे ए रीते साक्षीवत थइने रहेवुं. ज्यारे एम मनने विश्वास थशे त्यारे तेनुं काम पण थाशे. माटे जे अहंता ममतानो त्याग करशे ते कर्मनी वासनाथी छुटशे. ने ज्यां सुधी कर्म करशे ने मारुं नरसुं मानशे त्यां सुधी तेने कर्म भोगववुं पडशे. माटे जे करवुं ते वासना रहित करवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत प्रथम संपुर्णम्.

वचनामृत २ जो.

वळी एक दिवसे कह्युं के कोइ एक पुरुष रस्ते चाल्यो जतो हतो. चालतां चालतां सांज पडी गइ त्यारे एक गामनी परवाडे आव्यो. अने त्यां उभो रह्यो. एटलामां एक स्त्री रुपवंती सुंदर त्यां दीठी त्यारे

ते पुरुषने तेनी साथे भोग करवानी इच्छा थइ. पछी ते तेनी साथे संभाषण करवा लाग्यो. एटलामां ते गाममांथी कोइ एक माणस त्यां आव्युं. तेणे वटेमार्गुने कह्युं के अल्या तुं आ स्त्रीनी पासे केम उभो छे ? आ तो डाकण छे. एवुं सांभळी ते पुरुषने घणो भय लाग्यो. अने मनमां कहेवा लाग्यो के मने आ डाकणना भयथी बचावीने गाममां लइ जाय तो बहु सारी वात छे. अने ते घणो कंपवा लाग्यो. तेम आ जीवने संसार भोगववामां कंई पण सार नथी. केमके स्त्री तो डाकण स्वरुप छे ते जेम ए वटेमार्गुने डाकणनो भय लाग्यो तेम भगवदीने पण पर स्त्रीनो भय डाकणना जेवो राखवो. तो पोताना धर्मथी बचे.

वळी आ संसारमां प्राणीमात्रने भगवान स्वरुप देखे. अने प्रपंच सर्वे हरीरूप जाणे तो ते प्रपंचमांथी नीकळे. जेम आगळ मोटा पुरुष संसारमांथी नीकल्या छे तेम हुं ने मारूं छोडशे अने सर्वेना करतां भगवान

ने जाणशे. ते संसारना बंधनथी छूटशे. अने वळी अम जाणे छे जे आ जगत भगवानना हाथमां छे केमके जेम बळदनो धणी बलदने नाथे छे तेम सर्वे जगत भगवाननुं नाथेल छे. अने जेम प्रभु चलावे छे तेम चाले छे अने जे सारो नरसो भोग आपशे ते भोगवावे छे.

वळी प्रभु केवा छे के राजाने भीक्षुक करी दे छे. अने भीक्षुकने राजा करी दे छे. माटे जे जे भोगनो समय आवशे ते ते भोगवावशे. पण जे जीव चिंता करे छे ते खोटी छे. तेथी अेक प्रभुनी सेवा तथा प्रभुनुंज स्मरण करवुं. अने सर्वे जगतमां अेक प्रभु उपर बुद्धी राखवी. अ प्रकारे जे जीव चाले तेना उपर प्रभु प्रसन्न थाय. वळी कोइनी साथे द्वेष राखवो नही. तथा कोइनी निंदा करवी नही. अे रीते प्रभु विना जगतमां कांइ जोवुं नही. सर्व ठेकाणे प्रभुमांज बुद्धी राखवी. केमके प्राणी मात्र प्रभु विना कोइ छेज नही.

अेम नीश्चय जाणवुं.

इति श्रीमट्टूलालजी महाराजकृत वचनामृत द्वितीय संपूर्णम.

वचनामृत ३ जो.

वळी अेक दिवसे कह्युं के प्राणी मात्र स्थावर जंगम ते प्रभुनुं मंदिर छे. श्रीभगवाने भागवतमां कह्युं छे के आ सर्व जगत छे ते मारुं क्रीडा करवानुं स्थान छे माटे सर्व जगतमां हुं वसुं छुं तेथी कोइ पण मारा मंदिरने बाळशो नही. हवे बाळवुं ते शुं? ते कहे छे के कोइ पण प्राणी मात्रने कठण वचन कहेवुं नही. वळी कोइना उपर द्वेषबुद्धि राखवी नहि. कदाचित कोइ वखत मनमां द्वेष आवे तो ते ज्ञानवडे काढी नांखवो. माटे सर्व प्राणीमात्र कीडीथी मांडीने हाथी पर्यंतने विषे अमृत दृष्टिअे करीने जोवुं त्यारे अे जीव मारी सेवाने पात्र थाय. अने जो पात्र थया विना मारी सेवा करशे तो ते फलरूप नथी तेथी हुं तेना उपर प्रसन्न थतो नथी. माटे आ जीव सेवानुं पात्र

थाय तो ते मने प्रिय लागे अेम भगवाने कह्युं छे. हवे सेवा ते शुं ? ते कहे छे के आ जीवन मारा उपर स्नेह घणो उपजे तेथी हुं तेने अत्यंत प्रिय लागुं तेनुं नाम सेवा. माटे जे कोइ मारा उपर स्नेह राखीने मारी सेवा करशे तेने मारी प्राप्ती थाशे तेमां संदेह नथी. ते स्नेह अेवी रीते उपजे के मारी सेवा करतां बाहर नीकळवानुं मन थाय नहीं. वळी ज्यारे ते मारां दर्शन करे त्यारे तेने नवो नवो भाव उपजे ते नीरंतर मारा स्वरूपनुं ध्यान करे. त्यार पछी तेनी अेकादश इंद्रीय मारी सेवामां काम आवे. त्यारे हुं तेना उपर प्रसन्न थाउं. वळी ते लोभनो त्याग करे तथा कोइनी निंदा करे नहि. वळी मद मत्सरतानो त्याग करे. तथा सर्वेथी पोताने नीच जाणे. अने सर्वना करतां अेक प्रभुनेज माने. पोते तो साक्षीवत् थइने रहे त्यारे तेनुं काम थाय.

इति श्रीमद्गुलालजी महाराजकृत वचनामृत तृतीय संपूर्णम् ॥३॥

वचनामृत ४ थो.

वळी अेक दीवसे कह्युं के ऋषभदेवना पुत्र राज भरथ ते ज्यारे पोते ग्रहस्थाश्रम धर्म भोगवता हता त्यारे तेना घरनां सर्वे माणस भरथजीनी आज्ञामां रेहतां. अने भरथजीथी घणुं वीहतां रेहतां. ते अेम जाणता जे भरतजी अमारो त्याग करशे तो अमारी शी गती थशे ? अे रीते सर्वे कंगाल थइने भरतजा पासे रहे अने वळी अेम कहे के ज्यां सुधी अमारां भाग्य छे त्यां सुधी भरतजी अमारो अंगीकार करशे अेवी रीते सर्वे रहे पण भरतजी तो माहा ज्ञानी छे जेने चौद लोकना पदार्थ उपर वैराग्य छे तो आ लौकिकना सुख उपर मोह केम पामे ? पछी ते भरतजीए आ जगतना सुखने मळ सरखां जाणीने तेनो त्याग करीने पोते गलकी नदीना कांठा उपर तप करवा बेठा. त्यां एक दिवसमां त्रण वखत स्नान करे अने सालीग्रामजीनी सेवा करे. एम करतां करतां एक दीवसे

तेमने हरणीना बाळकनो संग थयो त्यारे ते बच्चाने जोइने भरतजीने दया आवी तेथी तेने पोताना आश्रममां लावीने तेनुं पालनपोषण करवा लाग्या. तेथी पोतानुं नित्य नियम कर्म सर्वे छुटी गयुं. पछी ते हरणीनुं बाळक मोटुं थइने भागी गयुं तेथी भरतजीनुं ध्यान ते हरणीना बाळकमां रह्युं अने अंतकाळे पण तेमां जीव रह्यो तेथी ते हरणीने पेटे अवतर्या, पण तेमने प्रथमनुं जातीस्मरण रह्युं हतुं जे हुं प्रथम भरतजी राजा हतो. अने हुं हरणीना संगथी हरण थयो छुं. माटे जो आ हरणनो देह छुटे तो हुं प्रभुनी भक्ती करुं. ए रीते वैराग्य उपजावीने त्रण घास कंइ पण चरे नही. अने कहेवा लाग्या के हे नारायण ! हे गोविंद ! एम कहीने ते हरणनो देह त्याग कर्यो. पछी ब्राह्मणने घेर तेमनो जन्म थयो. त्यारे पोते जडभरथ थइने राजा रघुगणने ज्ञान आपी तेने मुक्त कर्यो. अने पोते पण प्रभुने पाम्या. माटे संगदोष तो एवो

भुंडो छे. ते एवा मोटाने बाध करे तो आपणे कंगाळने बाध करे एमां शुं मोटी वात छे। तेथी चतुर पुरुषे कोइनो पण संग करवो नही. एक प्रभुमां चित्त राखवुं.

इति श्रीमद्गुलालजी महाराजकृत वचनामृत चतुर्थ संपूर्णम्.

वचनामृत ५ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के आ जीव तो अक्षर ब्रह्मथी थयो छे अने तेने सेवाती श्रीपूर्णपुरुषोत्तमनी सोंपी छे; पण आ जीवने प्रभुमां स्नेह आवतो नथी ते केम ? आ जीव पूर्णपुरुषोत्तममांथी प्रगट थयो होय तो एने पूर्णपुरूषोत्तम उपर स्नेह उपजे. माटे आ जीव जे करे छे ते स्नेह वीना करे छे. अने जे श्री-वल्लभकुळ छे ते पोताना सेव्य स्वरूप उपर केवो स्नेह राखे छे ? के एक बाजु द्रव्यनो ढगलो करो अने एक बाजु श्रीठाकोरजीने पधरावो तो श्रीवल्लभकुल द्रव्य सामुं जोशे नही. अने श्रीठाकोरजीने अति

स्नेह करीने पधरावी लेशे पण जे आ कळीना जीव छे तेने तो द्रव्य घणुं प्रिय छे. माटे त तो श्रीठाकोरजी सामुं जोशे नही. अने केवळ वैभव सामुं जोशे अने तरत मोह पामशे. माटे जीवमां ने श्रीवल्लभकुलमां घणो फेर छे.

वळी बीजुं द्रष्टांतः—जेम के आ जीव सेवा स्मरण करीने बाहर नीकळे छे ते बजारमां जइने शाकवाळाने कहे छे के हुं सेवा भजन करीने आव्यो छुं माटे तुं मने शाक आप. त्यारे पेलो कहे छे के उठ सेवा उभी था अहीं तो पैसा होय तो शाक मळे, सेवा बदले शाक आवतुं नथी. ए तो तुं खोटुं बोले छे. ए रीते जे जीव वाणी बोले छे त खोटी छे माटे आ जीव सेवा भजननुं माहात्म्य जाणतो नथी. सेवानुं माहात्म्य केवुं छे ते कहे छेः—के कोइ श्रीमहादेवजीने केहशे के तमे मने सेवानुं मूल आपो तथा श्रीनारदजीने केहशे के तमे मने सेवाने बदले कंइक

आपो, त्यारे श्रीमहादेवजी तेने कहे छे के हुं तने मारो कैलास आपुं, पण सेवाने बदले आपुं एवो पदार्थ मारी पासे नथी. त्यारे श्रीब्रह्माजी कहे छे के मारी ब्रह्मपुरी आपुं पण सेवानी बराबर कोइ पदार्थ चौदलोकमां नथी. वली श्रीनारदजी पण कहे छे के सेवा बराबर तो कोइ पण पदार्थ नथी. माटे आ पुष्टीमार्गमां तो सर्वोपरी सेवा छे. माटे आ जीव जे वस्तुना अधीकारी छे तेने ते वस्तु प्रिय लागे छे माटे आ जीव नर्कनो अधिकारी छे तेथी तेने नर्क वाहलुं लागे छे. हवे त्यां पूछ्युं के नर्क ते शुं? तो कहे छे के जे आ संसारनी विषयवासना छे तेज नर्क जाणवुं तथा द्रव्य, काम, क्रोध, लोभ, अहंता, ममता ए सर्व आ संसारमां नर्क जाणवुं. माटे जे नर्कना अधिकारि छे तेने तो नर्कज वहालुं छे. अने जे भगवद्रसना अधीकारी छे तेने भगवान वहाला छे पण संसारना जीवने ता संसारनुं सुख प्रिय लागे छे.

इति श्रीमद्गुलालजी महाराजकृत वचनामृत पंचम संपूर्णम्.

वचनामृत ६ ट्ठो.

वळी एक दिवसे कह्युं जे शास्त्रमां प्रभुनुं जे स्वरूप वर्णन कर्युं छे ते प्रभु केवा छे? तो कहे छे के जेनी सोल वर्षनी अवस्था छे तथा पीळां पीतांबर पहेर्यां छे कानने विषे मकराकृत कुंडल धर्यां छे अने मेघश्याम सुंदर स्वरुप छे वली तेज प्रभु वैष्णवने घेरे बालभावे करीने बिराजे छे ते व्रजभक्तना यूथना अधिपति छे ते श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीए कृपा करीने वैष्णवने माटे पधरावी दीधा छे माटे ते प्रभुथी कोइ मोटो नथी तेथी तेनी सेवा सावधान थइने करवी.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत छट्ठो संपूर्णम्.

वचनामृत ७ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के आ जीवशास्त्रने सांभळी एम जाणे के प्रभुतो इश्वरना इश्वर छे. ए रीते माहात्म्य जाणे ते साधनरुप जाणवुं. पण जेणे शास्त्र नथी सांभल्युं अने कंइ पण नथी जाणतो पण पोताना

सेव्य श्रीठाकोरजी घणा प्रिय लागे छे तेने फळरूप जाणवुं. केमके तेने श्रीठाकोरजीमां बालभावे करीने घणो स्नेह छे. ते बालभाव करीने श्रीठाकोरजीनी सेवा करे छे ते केवी रीते के जेम आपणा छोकरा उपर स्नेह छे तेथी छोकरा घणा प्रसन्न रहे छे. तेम ते बाळक करतां प्रभुजीने अगणीत बाळक करवा जोइए. ते फल रुप छे. वळी छोकरामां आपणी केवी प्रीती छे के कोइ आपणा छोकराने खांडनु खावुं आपशे त्यारे आपणे कहीशुं के एने शरदी थइ जशे. एवी रीते आपणे बाळकनुं जतन करीए छीए तो एवी प्रीती आ संसारना खोटा पदार्थमां छे तेवी प्रीती बाळभाव श्रीठाकोरजीमां होय तो तेनुं काम थाय. पण एवो भाव तो आववो बहु कठण छे माटे जे माहापुरुषे शास्त्रनी रीत बतावी छे ते प्रमाण चालवुं तथी प्रभु साधन मानीने आगळ फळप्राप्ती करशे.

–इति श्रीमद्दुलालजी महाराजकृत वचनामृत सप्तम संपूर्णम्,

वचनामृत ८ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के आगळ मोटा कही गया छे के पोताना सत्यस्वरुप जे श्रीठाकोरजी छे ते तो पूर्णपुरुषोतम छे एम वेद पण कहे छे, ब्रह्माजी पण कहे छे, नारदजी पण कहे छे, शुकदेव आदी लइने कहे छे अने भगवाने पण पोते श्रीमुखथी कह्युं छे के आ सर्व जगत मारुं स्वरुप छे माटे मारामां जगतने जोजो ने जगतमां मने जोजो. पण आ जीवने कंइ प्रतीत नथी माटे जे कोइ आ जगतमां जोशे ते संसार वहेवारथी छूटशे वळी तेने रागद्वेष मटशे तथा सम विषमता मटशे वळी पोतानुं पारकुं मटशे तथा अहंता ममता मटशे. अने ज्यां सुधी एवा धर्म जीवमां रह्या छे त्यां सुधी प्रभुनुं स्वरुप जाणतो नथी. तेथी जीव प्रभुनुं स्वरुप जाणवा सारुं घणुं करे छे पण भगवद माया एवी छे ते जाणवा देती नथी. वळी आपणा घरमां जे भगवद स्वरुप बिराजे छे तेनी कानी आपणने

आवती नथी. केमके श्रीठाकोरजीना मंदीर आगळ स्त्री पुरुष बेउ जणा हास्यवीनोद करे छे अने ते वखत जो माणस आवी जाय छे तो तेनी कानीए करीने बोलता चालता रही जाय छे, अने लज्जा पामे छे. ए रीते एटली शरम माणसनी आवे छे तेटली शरम प्रभुनी आवती नथी त्यारे प्रभुनुं स्वरुप कयांथी जणाय? माटे ज्यां सुधी भगवद् स्वरुप नथी जाण्युं त्यां सुधी गमे एटला दीवस सेवा करे तो पण सेवा फळरुप नथी माटे प्रथम प्रभुनुं स्वरुप जाणीने पछी सेवा करशे तो सेवा फलरुप छे. पण आ जीवने जेटलो माणसनो विश्वास छे तेटलो प्रभुनो नथी. ते उपर दृष्टांतः—

आपणा पडोसी आपणने कहे छे के तमारा घरमां चोर छे त्यारे आपणने चोरनी घणी बीक लागशे त्यारे कहे छे के चोर आपणने मारशे के शुं ? अने आपणा घरमांथी कंइक जणश भाव लइ जशे ए रीते एने पाडोशीना कहेवाथी विश्वास आवे छे पण तेने

भगवदीय उत्तम शिक्षा आपे छे अने घणी रीतथी भय देखाडे छे तो पण तेनो विश्वास आ जीवने आवतो नथी. माटे ज्यारे भगव यिनां वचन उपर वीश्वास आवशे त्यारे तेनुं काम थाशे. तेथी एक भगवानना चरणारविंदमां आश्रय राखीने सेवास्मरण करवुं. वळी प्रभुने विनंती करे के तमने गमे एम करो. ज्यारे एवो विश्वास आवे त्यारे आ जीव प्रभुनो थइने रहे छे.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत अष्टमो संपुर्णम्.

वचनामृत ९ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के आ जीव भगवत्स्वरुपने नथी जाणतो अने कहे छे के हुं भगवाननी सेवा करुं छुं. माटे एम ते माणसने मोटो अभागीयो जाणवो. वळी आपणने प्रभुनी मर्यादा आवती नथी जो आपणने प्रभुनी मर्यादा आवती होय तो आपणाथी कोइनी साथे मर्यादा वीना बोलाय नही. माटे ज्यां सुधी

मर्यादा विना बोले छे त्यां सुधी प्रभुने जाण्या नथी अने ज्यारे प्रभुनुं स्वरुप जणाय त्यारे प्रभुनी आगळ मर्यादा वीना बोलाय नही ते उपर द्रष्टांतः—

एक वैष्णव तथा तेनी स्त्री बेउ माणस भगवद् वार्ता करतां हतां पण तेनुं घर सांकडुं हतुं तेथी ते स्त्री पुरुष बेउ जण श्रीठाकोरजीने मंदीरमां पोढाडीने पोते वहार सुतां हतां कारण के ते एम जाणतां हतां के आपणा मोढानी वास श्री प्रभुजीने आवशे तेथी ते घरमां सूतां नही एम करतां एक दीवसे वरसाद आव्यो त्यारे श्रीठाकोरजीए आज्ञा करीने घरमां सुवसाव्या त्यारे घरमां सुता. माटे ए रीते ए वैष्णवने प्रभुनी मर्यादा आवी. अने तुं तो प्रभुने जाणतो नथी. वळी तने प्रभुनी मर्यादा पण आवती नथी अने वळी तुं कहे छे के हुं प्रभुनी सेवा करुं छुं ते तुं वीचार कर के आ सर्वे पदार्थ प्रभुना उपजावेल छे. जो जळ न होत तो तुं नहात शेनाथी? अने जो वस्त्र सामग्री

न होत तो तुं नहाइने शुं करत? तो वस्त्र सामग्री तो प्रभुनीज पासे रहे छे अने तुं तो प्रभुनी सेवामांथी बहार नीकळी आवे छे. माटे सर्वे वस्तु प्रभुनी छे अने तुं कहे छे के हुं प्रभुनी सेवा करुं छुं ते तो तुं केवळ खोटुं बोले छे. केमके सर्वेना कर्ता तो एक प्रभुज छे. अने तुं तो पोताने कर्ता माने छे. माटे पोताने कर्ता छोडीने क्षण क्षण एम विचार करवो के सर्वेना कर्ता तो एक भगवान छे, तो काम थाय. वळी जाणवुं जे माराथी भुंडो कोइ नथी आ प्राणी मात्र सर्वे भगवद्रूप छे. अने हुं तो एक महा नीच छुं, एवी नीरंतर भावना करवी अने नीचथी नीच थइने रहेवुं अने एक प्रभुनो द्रढ आश्रय करवो, तथा सर्वेना कर्ता प्रभुने मानवा. केमके प्रभु विना बीजुं कंइ छे नही. वळी भगवदीने काळना भय थकी नीकळवुं. ते काळना काळ तो प्रभु छे. प्रभु विना बीजो कोइ मोटो नथी. तेथी प्रभुना दासानुदास थइने रहेवुं. आ जगतमां

आपणुं तो कोइ छे नही. अने आपणुं जे मान्युं होय ते प्रभुने अर्पण करवुं. ते सर्वे अर्पण कराय छे. कशी चिंता करवी नही. ए रीते जे साक्षीवत थइने रहे ते प्रभुजीना थइने रहे. पछी तेणे एम समजवुं के प्रभुने गमे तेम करे. पछी तो धणीने गमे तो वाणोतर राखे, अने धणीने न गमे तो पेढी उपरथी उठाडी मेले, अने गमे तो सर्वे मीलकत सोंपी देय तेनो हर्ष शोक मनमां कंइ करवो नही. अने भगवदीए मरवुं अवतरवुं एनी चिंता राखवी नही. मरवानी तथा खाधा पीधानी चिंता तो संसारीने छे तेथी संसारीने द्रव्य वहालुं छे अने भगवदीने तो भगवान वहाला छे. माटे जे संसारी छे ते पोतानी सत्ता मानी बेठा छे. पण भगवदीने तो सर्व सत्ता प्रभुना विनियोगमां आवे तेम करवुं एक कोडी पण प्रभुना विनियोगथी बाहर जाय तेम करवुं नही. त्यारे प्रभुजी प्रसन्न थाय पछी शेठने वणोतरनो विश्वास आवे त्यारे तेने उंची

पेढी उपर बेसाडीने सर्व सत्ता सोंपे तेम प्रभुजी पण भगवदीथी कंइ अंतर राखे नही पण तेमां मुख्य वि-श्वासनुं कारण छे माटे सर्व वस्तुमांथी मन काढीने एक प्रभुनेज वहालां करवा. पछी प्रभु विना बीजुं कंइ जुवे नहि, रात्रदीवस प्रभुनी आराधना करे प्रभुनुं चिंतवन, प्रभुनुं ध्यान तथा प्रभुनी सेवा, कीर्तन करे अने एम जाणे जे प्रभु विना बीजो कोइ कर्ता छेज नही. अने जे आपणे सेवा करीए छीए ते ज्यारे आपणा प्रभुजीए सत्ता मूकी छे. त्यारे आपणाथी प्रभुनी सेवा थइ शके छे माटे जे जीव प्रभुने कर्ता छोडीने पोताने कर्ता माने छे तेने बाहिरमुख जाणवो माटे प्रभु विना बीजो कोइ कर्ता छेज नही. एम निश्चय जाणवुं, माटे सर्व वातमां प्रभुनोज विचार राखवो. एवी रीते जे विचारशे ते प्रभुजी विना बीजुं कंइ देखशे नही. एम जाणवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत नवमो संपूर्णम्.

वचनामृत १० मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के आगळ जे जे प्रभुने पाम्या छे ते सर्वे भगवदीयना संगथी पाम्या छे पण प्रभुथी कोइ प्रभुने पाम्या नथी. माटे क्षण एक भगवदीयना संग वीना रहेवुं नही केमके भगवदीना संगथी प्रभुनी प्राप्ति थाय छे. प्रभुनी पासेथी प्रभु नही मळे एवो भगवदीयना संगनो मोटो प्रभाव छे. वळी भगवदीयनी मंडळीमांथी भगवानना चरित्रनी ख्बर पडे केमके प्रभु पोते पोताना जस वरणवता नथी प्रभुतो भगवदीय द्वारा पोताना जस वर्णन करावे छे माटे एम जाणवुं जे भगवदीय सर्वेथी मोटा छे एम जाणीने भगवदीनो संग छोडवो नही अने ज्यां सुधी आ देहमां प्राण रहे त्यां सुधी सेवा स्मरण भावपूर्वक करवुं एटलुंज काम जाणवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत दशमो संपूर्णम्.

वचनामृत ११ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के आ जगतमां संपत्ति- वान् केने जाणवा? अने असंपत्तिवान केने जाणवा त्यारे कह्युं के आ जगतमां जे प्रभुनुं भजन स्मरण करे छे तेने संपत्तिवान जाणवा. अने जे प्रभुने भजता नथी तेने असंपत्तिवान जाणवा. पण आ जगतमां जे द्रव्यवान छे तेने कंइ संपत्तिवान जाणवा नही. अने जे भूखे मरे ते दरीद्री नही. वळी आ जगतमां जीव जे जे वाणी बोले छे ते एम जाणवुं के तेना हृदयमां प्रभु अंतर्यामी बीराजे छे ते जेम आ जीवने बोलावे छे तेम ते बोले छे. पण आपणे तो कांइ पण बोलवुं नही. आपणे कहीशुं के वहाणुं वाइ गयुं त्यारे वहाणाना देवता जे आधीदैवीक छे ते खीजे छे. वळी कहीए छीए जे वरसाद आवे छे, टाढ घणी पडे छे अने ज्यारे टाढ नथी पडती त्यारे कहीशुं के ओण टाढ पडी नही, वळी ताप घणो पडे छे, आ सारुं छे,

आ नस्सुं छे, मने फलाणे गाळ दीधी, फलाणो सारूं बोल्यो, ए रीते जे बोले छे ते सर्वे सत्य छे केमके प्रभुना वचन छे ते तो प्रभुरूप छे पण आपणे तो कंइ प्रभु संबंध विना बोलवुं नहीं. केनी पेठे के जेम गुरु दत्तात्रय ए अजगरने गुरु करीने तेनुं व्रत लीधुं जे कोइनी साथे संभाषण करवुं नही, अने भगवद् इच्छाए जे मळे ते लेवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत एकादशमो संपूर्णम्.

वचनामृत १२ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं जे आ जगतमां जेटला जीव छे तेने सर्वने प्रभुनी प्राप्ती केम थती नथी ? ते उपर कहे छे के आ जीव देह आरामी छे तेथी एम जाणे छे जे देहने सुखे सुख अने देहने दुःखे दुःख एम माने छे. ते उपर द्रष्टांतः—

जेमके आपणी स्त्री आपणी सेवा चाकरी करे छे

त्यारे ते आपणने प्रिय लागे छे अने छोकरां पण आपणुं काम करे तो वहालां लागे छे. वली घणुं द्रव्य खरचीने सारा सारा घर चणावे छे ते पण आ देहने सुखे करे छे. अने जे द्रव्यनो संग्रह करे छे ते पण पोताना देहने सुखे करे छे. ते एम जाणे छे के आपणे वृद्ध थइशुं त्यारे खाइशुं. ए रीते जे जे पदार्थ पोताना देहने सुख उपजावे छे ते प्रिय लागे छे. माटे आ जीव देहनो संबंधी छे तेथी तेने जन्म मरण छूटतुं नथी माटे केवळ अज्ञानथी देहना सुखे सुख माने छे. केमके आ देह तो खोटो छे, नाशवंत छे तेने आ जीव एम जाणे छे के खाधुं पीधुं ते पोतानुं छे एम जाणीने जे रीते देह सुखी थाय ते साधन करे छे ने आत्मा तथा प्रभुनुं सुख वीचारतो नथी माटे तेने देहारामी जाणवा. हवे जे जीव आत्मारामी छे तेनी देहने कोइ मारे अथवा कापे तो तेने दुःख लागतुं नथी केमके तेने देहने दुखे दुख नथी तेने तो आत्माने दुखे दुख

छे, अने आत्माने सुखे सुख छे. माटे ते देहारामी करतां आत्मारामीने उत्तम जाणवा. ते आत्मारामी करतां भगवदीयने उत्तम जाणवा. हवे भगवदीय केने केहवा तेनां लक्षण कहे छेः—जे वस्तु प्रभु आरोग्या होय तेज लेवी. वळी प्रभुना प्रसादी शणगार पहेरवा. तथा प्रभुने सुखे सुख मानवुं अने प्रभु आरोगे त्यार पछी प्रसाद लेवो पण तेनी पहेलां कांइ पण वांच्छना राखे नही केमके तेने खाधा पीधानी तथा विषय भोगनी कंइ पण अपेक्षा नथी केमके आ जीव प्रभुथी उत्पन्न थयो छे माटे जे वस्तु प्रभुजी अरोगे तेज लेवी पछी कोइ वातनी इच्छा राखे नही केम जे देह, इंद्रिय, अंतःकरण सर्व समर्पण करीने आत्मनीवेदनी थयो छे माटे सर्वे वस्तु समर्पण करीने दास थइने रहेवुं. पछी दासने कोइ वातनी फीकर चिंता करवी नही. प्रभुने सुखे सुख अने प्रभुने दुःखे दुःख मानवुं. वळी पोताने कर्ता मानवो नही. कर्ता तो एक प्रभुने जाणे त्यारे तेनुं काम थाय.

माटे श्रीहरी विना बीजो कोइ कर्ता छे नहि. आ जीव पोते स्त्री तथा छोकरांनो धणी थइने बेठो छे एज मोटो दोष छे केमके सर्वेनो धणी तो श्रीहरी छे तेथी एओनी शरणे जवुं. जे हुं कर्ता नथी एक हरीने कर्ता मानवा एम नीश्चय करीने हरीनो आश्रय करवो. बीजा कोइनो आश्रय करवो नही. ते केनी पेठे जेमके श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक शेठ पुरुषोत्तमदास तथा एक विरक्त तेनुं नाम मधुसुदन हतुं ते बे जणा एक परवतमां गया हता त्यां एक सिद्ध आवीने ते वीरक्तने मणी देवा लाग्यो त्यारे ते विरक्ते कह्युं के हुं मणीने शुं करुं मने शेर चुन जगदीश आपे छे. पण आ शेठ ग्रहस्थ छे जो ते मणी ले तो तेने पूछो. त्यारे शेठे कह्युं के जो तमने शेर चुन जगदीश आपशे त्यारे दसशेर चुन मने नहि आपे शुं ? माटे जगदीशनो आश्रय छोडीने मणीनो आश्रय कोण करे. ए रीते जो प्रभुनो आश्रय राखे तो काम थाय. वळी

आ जीव गमे तेम वर्ततो होय तोपण पोताने सुखी मानीने बेठो छे ते कहे छे के आपणने तो जे मल्युं ते खरुं, ते केनी पेठे के जेम जुवारनो रोटलो मळे छे त्यारे कहे छे, जो भाइ मारे छे, एवुं कोइने नथी. केमके तेने घउंना स्वादनी खबर नथी माटे एम जाणवुं जे संतापनुं मूळ ते सुख, अने तापनुं मूळ ते फल. केमके प्रभुनी लीलानो पार नथी ते जेम जेम पुष्टिमार्गमां प्रभुने चाहवानो ताप थाय तेम तेम तेने वधारे प्राप्ति थाय. हवे जेने मकाइनो रोटलो मळे छे ते एम जाणे छे के मारा जेवुं सुख कोइने नथी. पण तेने बाजरी तथा घउंना स्वादनी खबर नथी ते कोनी पेठे जेम कोइ निर्धन होय तेने एक हजार रुपीया मळे त्यारे ते एम जाणे के मने प्रभु मल्या. केमके तेने लाख रुपैयाना सुखनी खबर नथी. तेम आ जीव भगवाननी सेवा करे छे ते एम जाणे छे के मने प्रभु मल्या. पण जेनी साथे प्रभु साक्षात वातो करता होय तथा सानुभाव

जणावता होय तो तेना सुखनी शी गणत्री थाय ? माटे आ जीव जो आगळ आगळ चाले तो तेने वधु प्राप्ति थाय. माटे एम जाणवुं जे आ पुष्टिमार्गमां ताप भाव मुख्य छे. ताप भाव विना काम थाय नहि.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत द्वादशम संपूर्णम.

वचनामृत १३ मो.

हवे एक दिवसे पूछ्युं जे आ जगतमां जीव मात्रने प्रभुनी प्राप्ति केम थती नथी ? त्यां कहे छे के आ जीवना कल्याणने अर्थे ज्यारे ज्यारे भगवान प्रगट स्वरूप धरीने अवतार ले छे त्यारे आ जीव भगवानने ओलखतो नथी. केमके प्रभु तो कौतकी छे. ज्यारे श्रीरामचंद्रजी प्रगट थया त्यारे वांदरानी संगाथे वातो करता अने ज्यारे श्रीकृष्णावतार धर्यो. त्यारे सर्व गोपनी संघाते वातो करता, केवळ गोपना संघाते खेलता, आवी लीला प्रभु करता. वली कोइ समये

भगवान दैत्यनी संघाते युद्ध करता त्यारे कोइ समे जीतता अने कोइ समे हारता वळी श्रीकृष्ण भगवाने गोकुळमां प्रगट थइने गायो चरावी तथा श्रीगोपी जनना संगाते विहार–रासादिक लीला करी तो भगवान ज्यारे एवी लीला करे के त्यारे जगतना जीव भगवानने कामी कहे छे. माटे एवा प्रभु ते केम ओळखाय ? वळी ज्यारे श्रीकृष्णावतार थयो त्यारे जीव कहे छे के भगवान तो क्षीरसागरमां पोढ्या छे एम जाणीने शेषशाइ जे भगवान तेना जस गाय छे पण प्रगट प्रभु जे श्रीकृष्ण तेने कोइ ओळखे नहीं. प्रगट प्रभुने तो एक श्रीगोपीजनेज ओळख्या. बीजा कोइए ओळख्या नहीं तेम आ समयमां जे प्रभुजीए घेर घेर प्रगट स्वरुप धर्युं ते जीवना कल्याण सारुं थइने, पण आज कालना जीव एम जाणे छे. जे आ तो एटले सुधी छे. अने प्रभु तो द्वापरमां कृष्ण हता ते आज प्रभुना सनमुख श्रीकृष्णना जश गाय छे.

ते पोताने भगवद् प्राप्ति थवा सारु गाय छे. पण विद्यमान प्रभुने प्रभु जाणतो होय तो अवतारादिकना जस शा माटे गाय? माटे आ जीवने प्रगट स्वरुपनो निश्चय करवो, जे आ प्रगट छे तेज प्रभु साचा छे तेज मारा कल्याणने माटे आवुं स्वरुप धर्युं छे. जेम श्रीराम तथा श्रीकृष्ण ए स्वरुपोए पोताना भक्त उपर कृपा करी, तेम आ अवतार धरीने मने कृपा करवा पधार्या छे एम जाणीने प्रगट प्रभुनुं सेवा स्मरण करवुं अने पोताने कर्तापणुं मानवुं नहीं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत त्रयोदशमो संपूर्णम्

वचनामृत १४ मो.

वळी एक दिवसे कह्युं के आपणा सेव्य श्रीठाकोरजी छे ते आनंदघननी मूर्ति छे, सदा आनंदरुप छे, जेम खांडनी पुतळी नखथी शीख सुधी सरवे रस रुप छे तेम प्रभुनां अंग सरवे रसरुप छे ते रसना समुद्र

जे भगवान तेनो पार आवे नहि एवा सेव्य श्रीठाको-
रजी छे. अने ते प्रभुना श्रीअंगमां रस उछलीत थइ
रह्यो छे तेथी श्रीअंगने विषे रस ठरी शकतो नथी ते
मारु श्रीमहाप्रभुजीए सेव्यस्वरुपनी आगळ पाछळ
तकीया करीने धर्या छे. वळी प्रभु कोटानकोटी भक्तमां
रमण करे छे. पण ते मोह पामता नथी अने आ
जीव ज्यारे रसनो अनुभव करशे त्यारे पोताना शरीरनुं
भान रहेतुं नथी तेनुं दृष्टान्त केः—

जेमके कोइए दारु पीधो होय ते पोताना स्वरु-
पनुं भान जाणतो नथी त्यारे ते सर्व लोकोने गाळो
दे छे. केमके तेणे केफ पीधाथी शरीरनुं भान रहेतुं
नथी तेथी ज्यारे केफ उतरशे त्यारे ते लोकोने कहेशे
के में तमने समज्या विना गाळो दीधी हशे माटे त
मारो अपराध क्षमा करजो. पण प्रभु तो रसना समुद्र
छे अने कोटानकोटी भक्तनी साथे विहार करे छे. तो
पण आपने मोह थतो नथी पोते जो तेवाने तेवाज छे.

एवा प्रभुने श्रीमहाप्रभुजीए जीवने माथे पधरावी आप्या छे. एवा रसना समुद्र जे भगवान् तेना एक रोममांथी कोटी कोटी ब्रह्मांड प्रगट थया छे तो तेना स्वरुपनुं शुं कहेवुं माटे एवा स्वरुपनी सेवा करवी. सेवा विना प्रभु प्रसन्न थता नथी. माटे ताप भाव सहित प्रभुनी सेवा करवी प्रभु तो सदा आनंद निधान छे, मोटामां मोटा छे. सर्वना हृदयमां बिराजमान छे, सर्वना अंतर्यामी छे, प्रभु रसमय छे. "रसोवैसः" एवा छे माटे तेमने कंइ खबर नथी एम न समजवुं. आ जीव जे कर्म करे छे ते प्रभु जाणे छे. केमके प्रभुतो सर्वना साक्षी रुप छे. वळी सर्व रुप मटीने एकला थइने रहे छे. अने एकलामांथी सर्व रुप पण थाय छे एवा समर्थ ए प्रभु छे.

वळी त्यां पुछ्युं जे महाराज ? एटली बधी सर्वत्र हरिनी भावना शा वास्ते करवी पडी ? जे आ स्वरुप तो सेव्य भगवद् रुप छे. त्यारे कह्युं जे आ जीव मंद

भागी छे तेथी प्रभुनी भावना केवी रीते करी शके माटे ज्यां सुधी प्रभुनुं स्वरुप जाण्युं नथी त्यां सुधी प्रभुनी भावना करवी, अने प्रभुनुं स्वरुप जाण्या पछी सेवा करवी स्वरुप जाण्या विना सेवा करवी नहि.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत चतुर्दशमो संपूर्णम्

वचनामृत १५ मो.

एक दिवस पूछ्युं जे महाराज अमने भगवदीयनां लक्षण कहो त्यारे कहे छे के भगवदीय तो तेने केहवाः— जेणे पोताना स्वार्थ जीत्यो छे अने जेने स्वार्थ रह्यो छे ते संसारी जाणवा ते उपर दृष्टांतः—

जेमके दधिची ऋषि पासे देवताओए आवीने तेमना शरीरनुं अस्थि माग्युं त्यारे दधिचि ऋषिए देहनो त्याग करी पोताना शरीरनुं हाडकुं देवताओने आप्युं. अने पोते शरीरनो त्याग कर्यो. जेणे जीववानी पण आशा राखी नही माटे तेनुं नाम भगवदीय. ते

देवता पोताना स्वार्थने लीधे मागवा आव्या तेने सं-
मारी जाणवा. केमके वृत्रासुरने मारवा सारु तथा
तुच्छ पदार्थ एवुं जे स्वर्गनुं राज्य ते भोगववाने अर्थे
देवताए दधिचि ऋषि पासे शरीरनुं अस्थि माग्युं हतुं.
ए रीते भगवदीय पासे माग्युं तो आप्युं. माटे भगव-
दीय पासे प्राण मागे तो प्राणनी पण ना पाडे नहीं
तेनुं नाम भगवदीय. केमके प्राणनी पछवाडे सर्व प-
दार्थो रह्या छे.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत पंचदशमो संपूर्णम्.

वचनामृत १६ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं जे आ जीव पोताने कर्ता
माने छे तेथी ते बंधन पामे छे माटे तेनुं नाम अविद्या
कहीये. माटे ज्यारे हरी कर्ता माने त्यारे बंधन थाय
नही अने भगवद इच्छाए जे प्राप्त थाय तेमां निर्वाह
करवो तथा भगवद भजन करवुं. त्यारे त्यां पूछयुं जे

भक्ति ते शुं ? त्यारे त्यां कहे छे के श्रीठाकोरजी उपर प्रीती उपजे तथा स्नेह उपजे अने आ जगत उपर वैराग्य उपजे तेनुं नाम भक्ति अने सर्व वातमां भगवद् इच्छा माने जो गमे एटलुं कष्ट आवी पडे तोपण श्री ठाकोरजीनी सेवामांथी मन चलायमान थाय नही. पाशेर नवटांक जे मळे तेमां निर्वाह करे अने प्रभुनी सेवा छोडे नही. वळी बीजा कोइनी पासे सेवा करावे नही ते सेवानुं स्वरुप केवुं छे ते उपर द्रष्टांतः—के जेम श्रीगिरिधरलालजीने लीलामां पधारवानी इच्छा थइ ते समये नेत्रमां जल आवी गयां त्यारे श्रीहरिरायजीए पूछ्युं के महाराज केम छे. त्यारे श्रीगिरिधरलालजीए कह्युं के माराथी श्रीद्वारकांनाथजीनी जलनी सेवा तथा चुननी सेवा थइ नथी केमके ए सेवा तो वल्लभकुलमां बने नही ए तो वैष्णवने घेर जन्म होय तो बने माटे मारो जीव सेवामां रह्यो छे. ए रीते श्रीगिरिधरलालजीए कह्युं. माटे एवुं सेवानुं स्वरुप जाणीने बीजा कोइनी

पासे सेवा करावे नहीं. ए रीते दिनप्रति दिन सेवामां भाव वधतो जाय तेनुं नाम सेवा जाणवी.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत षष्टदशमो संपूर्णम्.

वचनामृत १७ मो.

वळी एक दीवसे पूछ्युं जे तामस भक्ति ते शुं? त्यां कहे छे के जीव आखो दिवस क्रोधमां फर्या करे, काइनुं बोल्युं गमे नहि, करे थोडुं ने कहे घणुं, तथा काइनी मोटाइ देखी शके नहि तेनुं नाम तामस भक्ति. हवे कहे छे के ज्यां सुधी नवधा प्रकारनी भक्ति होय त्यां सुधी प्रभुनी प्राप्ती थाय नहीं अने ज्यारे दशमी भक्ति प्राप्त थाय त्यारे तेने भगवत्प्राप्ती थाय. हवे ते भक्तिनुं स्वरुप कहे छे. अहर्नीश भगवानना चरणारवींदमां स्नेह रहे, निमिष मात्र पण मन चलायमान थाय नही ने श्रीठाकोरजीनी सेवा करे ते एम जाणे जे हुं करतो नथी अने सेवाना फलनी इच्छा राखे नही

माटे जो पोताने कर्ता माने तो कामना रहे पण ए तो अकर्ता छे तेथी एम जाणे छे तो तेवाने भगवद्लीला नी प्राप्ती थाय. माटे एम समजवुं के जेने कोइ पदार्थ नी इच्छा होय तेना उपर प्रभु खीजे छे प्रभु एम जाणे छे के जे जीवे मारुं स्वरुप जाण्युं नही माटे ए खोटो छे अने जे भगवदीय छे ते तो एम जाणे छे के अहो! प्रभुजी मने तो जन्मोजन्म सेवा करावजो. पण तेने बीजी कंइ वासना उपजे नही तेने तो एक श्रीठाकोर जीमां प्रीती छे तेथी तेने बीजुं कंइ गमतुं नथी. वळी भगवदीय एम जाणे छे के प्राणी मात्रना हृदयमां भगवद् बीराजे छे एम जाणीने सर्वे प्राणी मात्रमां दया राखे छे. वळी जीव मात्रमां कोइने मोटो जाणे नही, मोटा तो एक श्रीठाकोरजीने जाणे. पोताने सर्वनाथी हलको जाणे. तेने सर्वोपर भगवदीय कहीये.

वळी भगवदीय केवा छे के श्रीशुकदेवजी जेवा के जेमने भगवानना जस प्रिय छे. माटे जे कोइ प्रभु-

ना जस गाय छे तेनेज प्रभु घणा प्रिय लागे छे तेने प्राणथी पण प्रिय लागे छे. माटे प्रभुना जस उपर भाव राखवो. तेथी करीने सारस्वत कल्पना जे श्रीठाकोरजी श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तेमनी प्राप्ती थाय. पछी प्रभुजी भक्तने पोताना जेवो करे, पोतानो मित्र करीने पोतानो वैभव आपे, तथा अष्ट सिद्धि आपे. पण जे भगवदी छे ते तो कंइ लेता नथी ते तो भगवाननी सेवा तथा भजननुं पुरुषार्थ माने छे एम जाणीने सेवा भजन श्रद्धापूर्वक करवुं अने बीजा कोइनो आश्रय करवो नही. भगवद् इच्छाए जे मळे तेमां निर्वाह करवो. वली कोइनो दोष जोवो नही संतोष राखवो अने सेवाभजनमां पोताने कर्ता मानवुं नही अने वळी हाथ जोडीने एम केहवुं के हे प्रभु! हुं तो महा नीच छुं. पापीमां पापी छुं, पण हुं आपनो शरण छुं हवे जेम आपनी इच्छा आवे तेम करो. मारी कृती सामे जोशो नही एम मन, वचन, अने कर्म वडे आधीन

थइ रहेवुं एवो भाव राखवो. त्यारे प्रभुने दया आवे त्यारे आ जीवनुं काम थाय. केमजे प्रभुतो दयानिधान छे. तेथी दीनभगवदीय प्रभुने बहु प्रिय लागे छे.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत सप्तदशमो संपुर्णम्.

वचनामृत १८ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के जीवसेवा भजन करशे पण मन लौकिकमां राखशे तो तेथी लोक रीझशे पण प्रभु नही रीझे माटे जो प्रभुने प्रसन्न करवा होय तो लौकिक कामना छोडीने सेवा करे तो प्रभु प्रसन्न थाय. तथा एक प्रभुनोज आश्रय करवो तेथी प्रभु प्रसन्न थाय. ए रीते भक्तिमार्ग तो अति दुर्लभ छे. भक्ति कने कहेवी? तो कहे छे के गजेंद्रने झुंडथी छोडाव्यो. ते कंइ भक्ति नही. वळी द्रौपदीनां चीर पूर्यां ते पण भक्ति नही. अर्जुनना सारथी थइने रथ हांक्यो ते पण भक्ति नही. श्री जसोदाजीए दामणे बांध्या अने माग्या ने मृतिका

खाइने चौद ब्रह्मांड देखाडया ते पण भक्ति नही, वळी ज्यारे इंद्रकोप थयो त्यारे गोपगोपीओए कह्युं के अमारी रक्षा करो त्यारे श्रीठाकोरजीए गिरिराज धारण करीने सर्वेनी रक्षा करी ते पण भक्ति नहीं वळी श्रीयमुनाजीए श्रीठाकोरजीना चर्णस्पर्श करवानो मनोर्थ कर्यो तेथी जल उंचां चडयां त्यारे श्रीवसुदेवजीने डर लाग्यो त्यारे श्रीठाकोरजीए चर्णस्पर्श कराव्या त्यारे श्रीयमुनाजीए मार्ग दीधो ते पण भक्ति नहि, वळी अंतर्धान लीलामां गोपीजनो विप्रयोगमां वनवनमां डोल्यां ते पण भक्ति नही. माटे ज्यां सुधी नीरुपाधी प्रीती उपजे नही त्यां सुधी भक्ति जाणवी नही. त्यां पुछ्युं जे महाराज भक्तिनुं स्वरुप केवुं छे ते कहो. त्यां कहे छे के आ देहने अहंता ममता छुटे, तथा हुं ने मारुं मटे, त्यार पछी निरुपाधी प्रीती उपजे, तथा भक्ति करे, जेमां कशी वातनी कामना छे नही. एक प्रभुना चरणारविंदनी कामना राखे. पोताने अर्थे कंइ पण मनोर्थ

करे नहीं; अहर्निश भगवद्सेवा, भगवद्भजन कर्या करे, पोताना उद्धारनी कामना राखे नहीं, केवळ प्रभुनुंज सुख विचारे, देह धर्यानुं कार्य तो एक सेवाज छे एम माने, बीजी कोइ वात हृदयमां आवे नहीं, सर्व वासना रहीत सेवा करे, त्यारे प्रभु प्रसन्न थाय एवुं भक्तिनुं स्वरुप छे.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत अष्टादशमो संपूर्णम्.

वचनामृत १९ मो.

हवे एक दिवस दिक्षिते पूछ्युं जे महाराज आजीव सेवा करे छे, स्मरण करे छे पण तने हुं ने मारुं मटतुं नथी त्यारे तेने भगवत्प्राप्ती क्यांथी थाशे? त्यां कहे छे के जे कोइ श्रीठाकोरजीनुं स्वरुप जाणीने सेवा करशे तेने प्राप्ती थाशे. वळी आ पुष्टिमार्गने विषे ताप भाव मुख्य छे ते तापभाव केने कहेवो ते उपर द्रष्टांतः—

जेमके कोइ स्त्रीनो पति परदेशमां गयो होय तो

तेनी स्त्री घणो विरह ताप करे छे. के हवे मारो पति क्यारे आवशे. एम करतां करतां केटलाक दीवसमां तेनो पति घेर आव्यो पण पोतानी स्त्री साथे कंइ बोले नही त्यारे ते स्त्री कहे छे के मारा पति गाम गया हता त्यारे तो शुं करीए पण हवे आव्या छे तो पण मारी साथे बोलता नथी. ते बोल्या विना केम रहेवाय? हुं दुःख केने कहुं, माटे आ जीव्याथी तो मरवुं भलुं. आ मारा अंतरना दुःखनी वात केने कहुं. मने तो खावुं पीवुं कंइ भावतुं नथी, मारो पति हाथ आव्या पण में भोगव्या नही. एम कहे छे त्यारे तेनी साथण कहे छे के बाइ तारो पति तारी साथे बोलतो नथी तेनी अमने शी खबर पडे. हुं जाणुं छुं के ए जीव्याथी तो मुवा भला. ए रीते ए लौकिक धणी उपर एवो भाव राखे छे पण आ धणी तो चौदलोकनो नाथ छे ने जन्म जन्मनो पति छे, वळी ते प्रभु केवा छे के जेना एक रोममांथी कोटी कोटी ब्रह्मांड उत्पन्न थया छे. तो एवा

धणी ज्यारे आपणी साथे बोले नही, चाले नही. तो तेमना तरफनो ताप कोइ जीवने थतो नथी ए वात बहु खोटी छे. माटे ताप भाव सर्वथा जोइए. आ मार्गमां तो ताप भाव मुख्य छे माटे जेना उपर श्रीमहाप्रभुजी प्रसन्न थाय छे तेने ताप भावनुं दान करे छे.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत एकानविंशतितमो संपूर्णम्.

वचनामृत २० मो.

हवे एक दीवसे पूछ्युं जे महाराज पुष्टिमार्गना श्रीठाकोरजीनुं स्वरुप कहो. अने मर्यादामार्गना श्रीठाकोरजीनुं स्वरुप कहो. पुष्टिमार्गना श्रीठाकोरजी केवा छे के जेम कोइ पोताना छोकराने घरमां रमाडे छे अने मुखचुंबन करे छे अने अति दीनताए करीने बोले छे अने जेम घेलो थइ जाय तेम छोकरानी साथे बोले छे त्यारे तेने पोताना शरीरनुं भान रहेतुं नथी तो एवा भावे करीने पुष्टिमार्गना श्रीठाकोरजीनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे मर्यादा मार्गना श्रीठाकोरजीनुं स्वरूप कहे छे के तेज पुरुष ज्यारे राजानी सभामां जाय छे त्यारे पोताना छोकराने खीजे छे के तमे अहिं केम आव्या ? एम बोले छे तेनुं कारण के त्यां तेने मर्यादा आवे छे माटे ए रीते मर्यादा मार्गना श्रीठाकोरजीनुं स्वरूप जाणवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत विंशतितमो संपूर्णम.

वचनामृत २१ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं जे श्रीठाकोरजीने अन्य देवनुं भजन गमतुं नथी. तथा वैष्णवनो द्रोह गमतो नथी त्यां पूछ्युं जे अन्यनुं भजन ते शुं ? त्यां कहे छे के श्रीठाकोरजी वीना कोईनो आश्रय करवो नहीं केमके अन्याश्रय प्रभुने सर्वथा गमतो नथी. त्यां वळी रामजीए पूछ्युं जे महाराज तमे कहो छो के अन्याश्रय तथा वैष्णवनो द्रोह न करवो पण हे महाराज !

प्रभु वीना कोइने जाणतो नथी ते अन्याश्रय केम करे ते कहो ? अने वैष्णवनो द्रोह ते शुं ? त्यां कहे छे के कृष्ण विना बीजुं कंइ जोवुं तेज अन्याश्रय. माटे ते अन्याश्रय न करवो तथा वैष्णवनो द्रोह पण न करवो. वळी त्यां कह्युं के प्रभु कोणे जोया छे ? तो कहे के शीवजी, ब्रह्माजी, नारदजी, सनकादिक, भरथजी, शुकदेवजी, ए सर्वे मोटा छे पण सर्वोत्तम प्रभुने जाणता नथी तो बीजानी शी वात कहीये. सनकादिक छे कोइ समय समाधीमां बेसे छे त्यारे घडी बे घडी सर्वात्म भावे करीने प्रभुने देखे छे बीजा कोइ जाणता नथी. घणुं तो शुं कहिये पण सर्वात्मभाव थवो बहु कठण छे अने प्रेमजीए एटली सेवा श्रीनाथजीनी करी पण वल्लभकुळनी कानी तेणे राखी नही.

इति श्रीमद्गुकुलजी महाराजकृत वचनामृत एकविंशतितमो संपूर्णम्.



वचनामृत २२ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के राइ जेटली सेवानुं फल मेरु समान प्रभु माने छे, पण राइ जेटली सेवा ते शुं ? ते आपणे जाणता नथी ते तो सर्व प्रभुने हाथ छे प्रभु राइनो मेरु करे तो थाय अने मेरुनो राइ करे तो थाय एवा समर्थ प्रभुजी छे. माटे प्रभुनीज सेवा करवी तो प्रभु प्रसन्न थाय माटे जे रीते प्रभु प्रसन्न थाय ते करवुं. हवे एक दीवसे नारदजीए ब्रह्माजीने कह्युं के महाराज तमे तो प्रभु छो. त्यारे ब्रह्माजीए कह्युं के प्रभु तो बीजा छे, त्यारे नारदजीए पूछ्युं के बीजा प्रभु ते कया ? तो ब्रह्माजी कहे छेः— प्रथम तो १ अंड थयुं, तेमांथी एक वैराट थयुं, अने वैराट तेज रूप भगवान छे, अने तेना नाभीकमलमांथी हुं थयो छुं वळी ते प्रभु साक्षी थइने जोवावाळा छे ते वैराटमांथी आ जगत प्रगट थयुं छे. आ जगतने प्रभु जेम नचावे तेम नाचे छे, सर्वना कर्ता तो पोते छे

अने ते प्रभुने पाप तथा पुन्य कंइ लागतुं नथी. जेम के चोदलोकमां आकाश जेम व्यापक छे तेम भगवान पण सर्व व्यापक छे तेथी तेनुं अजवाळुं सर्व ठेकाणे थइ रह्युं छे. जेमके सहवारे सूर्य उगशे त्यारे सहु कोइ देखशे ने सूर्य उग्या पछी जेने जेवां कर्म करवां होय ते तेवां कर्म करे छे. तेमां कोइ पाप करे छे कोइ पुन्य करे छे ते पाप ने पुन्य सुर्यना प्रकाशथी थाय छे पण ते सूर्यने लागतुं नथी. तेम प्रभुने पण कंइ पाप ने पुन्य लागतुं नथी. माटे जे जेवां कर्म करशे ते तेवां कर्म भोगवशे जे पुन्य करशे ते सारुं पामशे ने पाप करशे ते नरसुं पामशे पण प्रभुने तो कंइ लागतुं नथी. त्यां पूछ्युं के आ जगतमां कया प्रभुनी सेवा करवी. तथा केनुं स्मरण करवुं, त्यां कहे छे के भजवाना तो प्रभु न्यारा छे ते तो सर्वोपर छे वळी ते प्रभु कोइना हाथमां आवे एम नथी, जो कोटानकोटी साधन करे तो पण तेनो पार पमातो नथी.

त्यां वळी पूछ्युं के एवा प्रभुनी प्राप्ती केम थाय. त्यां कहे छे के अहरनीश ए स्वरुपमां विकल रहे ते केवी रीते के प्रभुना विरहमां पोतानुं अनुसंधान रहेतुं नथी. एम सदाकाळ तापयुक्त रहे तो प्रभुने दया आवे. पण ज्यां सुधी एवो भाव आवे नही त्यां सुधी प्रभु प्रसन्न थाय नहीं. वळी आ जीव एम जाणे के हुं कथा सांभळीने ज्ञानी थइने प्रभुने प्रसन्न करुं पण ए रीते प्रभुनी प्राप्ती थाय नही. त्यां वळी पूछ्युं के प्रभु केवा जीव उपर प्रसन्न थाय छे त्यां कहे छे के जे जीव एम जाणे के हुं तो मूर्ख छुं, एवुं समजीने अणसमजु थइने रहे अने मनमां विरह भावना राखे के प्रभुजी मने क्यारे मळशे हुं तो कंइ समजतो नथी हुं कांइ प्रभुने जाणतो नथी अने जे मोटा भगवदी छे तेने तो प्रभु मल्या छे पण मारे प्रभु मळवानी शी आशा ? ए रीते दीन थइने निराश थाय तथा नीरंतर विरहभावना करे त्यारे एवा दीन जीव उपर प्रभु

कृपा करे माटे ज्यारे प्रभुने दया आवे त्यारे काम थाय.

इति श्रीमद्दुलालजी महाराजकृत वचनामृत बावीशमो संपूर्णम्.

वचनामृत २३ मो.

वळी एक दिवसे कह्युं जे आ प्राणीमात्रमां भगवाननुं तेज रह्युं छे ते केवी रीते ? के जलमांथी जीव थाय छे, पृथ्वीमांथी जीव थाय छे, आकाशमांथी जीव थाय छे, स्त्रीओमांथी जीव थाय छे एम कीडीथी ब्रह्मा पर्यंतनी उत्पत्ति जाणवी. वळी जेम सूर्यना उगवाथी प्रकाश थाय छे तेम प्रभु पोता पासे पण छे ने जगतमां पण छे. सूर्यनुं तो एक द्रष्टांत छे. हवे आ सर्व जगत प्रभुना वैराटमांथी उत्पन्न थयुं छे ते प्रभुनी इच्छामां आवे त्यां सुधी राखे अने इच्छामां आवे त्यारे प्रलय करे ए सर्व प्रभुनो विलास छे जे संसारीजीव छे तेने तो संसारज फल छे पण तेमां जे सुकृत्य करे ते पित्रुलोकने पामे छे वळी ते करतां शाळा,

यज्ञादीक करे तो ते देवलोकने पामे, हवे जे मर्यादा मार्गना जीव छे ते पोताना देहन कष्ट आपे छे अने आत्मानुं सुख वीचारे छे पण जे पुष्टिमार्गीय जीव छे ते तो केवल प्रभुनुंज सुख विचारे छे. पोतानी देह तथा आत्मानुं सुख वीचारता नथी एम जाणीने पुष्टिमार्गीने सदा विरहताप करवो ते विरह करतां करतां पोतानी देह सुकाइ जाय जेम मर्यादामार्गीनो देहसाधन करतां करतां सुकाइ जाय तेम पुष्टिमार्गीनो देह विरह करतां करतां सूकाइ जाय पण प्रभु उपरनो स्नेह एवो ने एवो रहे तेनुं नाम पुष्टिमार्गीनो भगवदीय जाणवा.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत त्रेवीशमो संपूर्णम्.

वचनामृत २४ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं जे पोताना जे सेव्य स्वरुप श्रीठाकोरजीनुं स्वरुप केवुं छे ते स्वरुपने वि

प्रतिमानी भावना करवी ते केवी रीते के ज्यारे श्रीठा·
कोरजी अनासर थाय त्यारे सेवा तथा चरणस्पर्शनी
भावना करवी तेनुं नाम प्रतिमानी भावना जाणवी.
पण जेने स्वरुपन विषे कंइ चींतवन रहे नही ते प्रति·
मानो भाव नही. प्रतिमाना भावनो साक्षी केने जा·
णवो ? त्यां कहे छे के तेनुं मन छे तेज साक्षी छे.
माटे जे पोताना मनने निश्चय करशे ते प्रतिमानो
भाव जाणशे माटे जे कोइ श्रीठाकोरजीने रसमय
जाणीने सेवा करशे तो तेनुं काम थशे माटे प्रभु उपर
स्नेह राखवो वळी प्रभुना जस गावा, जे कोइ प्रभुना
जश गाय छे तेने आनंद आवे छे पछी ते जीव धर्म
सहित प्रभुना जस गातां गातां विरह करीने पछी
रुदन करे छ पछी ते जीव धर्म छोडीने धर्मी जे भग·
वान तेने पामे छे. वळी आ जीव कथा सांभळतां
आनंद पामे छे ते धर्म सहीत कथा सांभळतां सांभ·
ळतां पछी विरहताप करीने रुदन करे वळी आ जीव

सेवा करीने आनंद पामे छे ते धर्म सहित सेवा करतां करतां विरहताप करीने रुदन करे छे ते एम जाणे जे मने प्रभु क्यारे मळे. अने प्रभु क्यारे कृपा करे, त्यारे ते जीव धर्मी जे भगवान तेने पामे. त्यां वळी पूछ्युं जे धर्म ते शुं अने धर्मी ते शुं? त्यां कहे छे के धर्मी ते पुरुषोत्तम अने धर्म ते तेने रहेवानुं मंदीर छे ते जाणवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत चोवीशमो संपूर्णम्.

वचनामृत २५ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं जे आ जगतने मुको ने दिव्य द्रष्टिथी भगवानने जुवो केमके प्रभुने कपटभाव गमतो नथी त्यां कह्युं के कपट ते शुं? त्यां कहे छे के आ सर्वे वस्तु प्रभुनी उपजावेल छे पण तेनो मालीक आ जीव थइने बेठो छे तेथी करीने प्रभु प्रसन्न थता नथी तुं वीचार कर के ज्यारे तुं आव्यो छे त्यारे

एकलोज आव्यो हतो अने जइश त्यारे पण एकलोज जइश तारी साथे कोइ पण आवशे नही तो पछी तारो कोण धणी थशे ? माटे तें जे पोतानुं मान्युं छे ते सर्वे भगवानने अर्पण कर तो प्रभु प्रसन्न थशे केम के आपणो आत्मा भगवानने सोंपीए ने जे पदार्थ आपणी पासे होय ते सोंपीए त्यारे काम थाय. वळी स्वभाव पण शील राखवो तो प्रभुजीने गमे माटे जो आत्मा सोंपीए ने आत्म संबंधी वस्तु न सोंपीए तो प्रभुजीने गमे नही केमके एक सुजातीथी बने नही बे सुजातीथी बने. एम जाणीने प्रभुथी कपट राखवुं नही. केमके प्रभुने कपटभाव गमतो नथी प्रभुने तो शुद्धभाव गमे छे बोलवुं साचुं ने आचरवुं खोटुं तेथी कंइ प्रभु प्रसन्न थता नथी.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत पंचविशमो संपूर्णम्.

वचनामृत २६ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं जे आ जगत मात्र प्रभुनी लीला छे माटे आ जगत् प्रभुनी लीला जाणे तेनुं नाम भगवदीय. माटे मोटा भगवदीय छे ते तो आ जगत प्रभुनी लीला माने छे. श्रीशुकदेवजी तथा नारदजी आदि लइने जगतनी लीला जुवे छे तेओ तो सर्वे आ जगतमां भगवानने जुवे छे. श्रीभगवाने रासादिक लीला करी तेने भगवदीये तो भगवाननी लीला जाणी पण शीशुपालादिक जे असुर हता तेणे कह्युं के कृष्ण तो कामी छे, अने भगवदी भगवाननी लीला गाय छे अने आपणने तो लौकिक द्रष्टिथी विपरीत लागे छे पण प्रभुनी तो सर्वे लीला छे ते केनी पेठे तेनुं द्रष्टांतः—जे लौकिकमां कोइनो विवाह थाय छे त्यारे वेवाइने फटाणामां गाळो दे छे. हांसी, मश्करी करे छे ते सर्व मीठी लागे छे. पण ते कंइ गाळो मीठी नथी लागती तेनो स्नेह मीठो लागे छे.

पण जो कोइ द्वेषथी गाळो दे तो क्रोध उपजे छे तेम प्रभुनी तो सर्वे लीला छे पण ते लीलामां जे स्नेह राखे तेनुं नाम भगवदीय. अने जेने द्वेष आवे छे तेने आसुरी जाणवा. पण प्रभुनी तो ए बेउ लीला छे एम जाणे त्यारे प्रभुजी प्रसन्न थाय.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत छवीसमो संपूर्णम्.

वचनामृत २७ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के ज्यारे बळदेवजीने भगवाने रास रमाड्या त्यारे त्यां दैत्य आव्यो ते भक्तने हरी गयो ते भगवाने जाण्युं तेथी दैत्य पासेथी भक्तने मूकाव्या अने दैत्यने मार्यो. हवे जे भक्तने दैत्य हरी गयो तेनुं कारण ए छे जे ते भक्तनो भाव अनन्य हतो तेथी तेने दैत्य हरी गयो. माटे भगवदीने अनन्य भाव राखवो. वळी कह्युं के श्रीकृष्ण जे श्रीपूर्णपुरुषोत्तम छे तेनी प्राप्ती श्रीमहाप्रभुजीनी कृपाथी थाय छे.

श्रीभगवानना बीजा अवतार तो घणा थया छे. जेटला भगवानना मस्तकना केश छे तेटला भगवानना अवतार छे पण ते कोइथी भगवद प्राप्ती थाय नही.

वळी पूछ्युं जे महाराज महाभारतमां जेने भगवाने मार्या तेने वैकुंठनी प्राप्ती थइ ते तो ठीकज थइ पण केटलाकने अर्जुने मार्या छे अने केटलाकने भीमे मार्या छे अने केटलाकने बलदेवजीए मार्या छे पण ते सर्वेने पोताना लोकनी प्राप्ती थइ, सर्वेने वैकुंठ मल्युं तेनुं कारण शुं तो कह्युं के ते बधाने भगवाने मार्या छे बीजानुं तो एक नीमीत्त मात्र छे " निमित्त मात्रं भव सव्य साचिन् " तेथी पोताना लोकनी प्राप्ती थइ एम जाणवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत सत्तावीसमो संपूर्णम्.

वचनामृत २८ मो.

वळी एक दीवसे पूछ्युं के जे काम आपणे म·

नमां धारीए छीए अने ते सिद्ध थाय छे त्यारे आपणे मानीए छीए के आपणुं धार्युं थयुं. ने जो धार्युं न होय तो थाय नही. पण जे काम आपणे धार्युं न होय ते काम थाय छे तेनुं कारण शुं ? त्यां कहे छे आपणुं धार्युं तो कंइ पण थाय नही. सर्वे प्रभुनुं धार्युं थाय छे. हवे कहे छे के जेटला प्रभुना अवतार थया छे पण तेना प्रागट्य समयमां कोइ प्रभुनुं स्वरुप जाणतुं नथी माटे जो प्रभु कृपा करे तो स्वरुप जणाय. नही तो प्रभुनुं स्वरुप जणाय नही. केमके प्रभुने विषे विरुद्ध धर्म छे. केवी रीते के ज्यारे श्रीयशोदाजीने घेर प्रगट थया त्यारे प्रभु साधारण बाळकनी पेठे क्रीडा करे, जो स्तनपान करावे तो करे; नही तो रुदन करे. वळी स्तनपान करतां बगासां खाय छे, अने मृतिका खाइने चौदलोक मुखमां दखाडे छे अने वळी पोतानी माया वडे भुलावी दे छे. वळी श्रीयशोदाजीए उलुखले बांध्या त्यारे नेत्रसुपोळुं नही, एवी लीला पण देखाडी. तथा शक-

टासुरने मार्यो, अने कालीनाग नाथ्यो, एवा अनेक चरित्र करता जाय पण पाछा मोह उपजावी पोतानुं माहात्म्य भुलावता जाय छे. माटे बाललीलामां प्रभु जणाय नही पण प्रभु जे जे मोटां पराक्रम करे छे तेना पाछळथी भगवदीयो जस गाय छे त्यारे प्रभुना स्वरुपनी खबर पडे छे तेम आपणा घरमां श्रीठाकोरजी बीराजे छे तेने बेसारीए तो बेसे छे पोढाडीए तो पोढ छे अने जो भोग न धरीए तो भूख्या रहे छे पण ते प्रभुने भूख्यानो शोक नथी केमके पोते पूर्णानंद छे तेने हर्ष शोक कंइ छे नही. पण भगवदीये तो प्रभु उपर बालभावे वात्सल्यता राखवी. अने आ समयमां प्रगट स्वरुप बिराजे छे पण तेना स्वरुपने कोइ ओळखतुं नथी माटे एवा प्रभु तो भाग्य होय तोज जणाय. अने भगवदी छे ते भगवानना पराक्रम जाण्या वीना भगवानने माने छे तेथी तेनुं काम थाय छे माटे प्रभुजी उपर स्नेह आसक्ती उपज्या विना प्रभु प्रसन्न थता

नथी ए रीते एक दीवसे कह्युं हतुं.

इति श्री [illegible]जी महाराजकृत वचनामृत अठावीसमो संपूर्णम.

वचनामृत २९ मो.

वळी एक दीवसे कह्युं के भगवानना चरित्रनो कोइ पार पामतुं नथी केमके ते सर्वे अवतारना अवतारी भूत छे. ब्रह्माजीए नारदजीने कह्युं जे अमे प्रभुना चरित्रनो पार पाम्या नथी. शेषजी हजार मुखथी प्रभुना जश गाय छे, तो पण पार पामता नथी, एवा आदि सनातन छे. एवा मोटा ब्रह्मादिक छे ते पण प्रभुनी लीलानो पार पामता नथी तो बीजानी शुं वात कहीए. हवे त्यां पूछ्युं के एवा प्रभुजी प्राप्त केम थाय ? एम नारदजीए ब्रह्माजीने पूछ्युं. त्यां कहे छे के एवा मोटा भगवदीय छे ते पण भगवाननी लीला समुद्रनो पार पामता नथी तो आजकालना जे जीव स्त्री शुद्रादीक एवानी शुं गती थशे ? त्या कहे छे के जे कोइ जीव

प्रभुने सर्वात्म भावे करीने भजशे तो तेनुं काम थाशे. वळी मोटा भगवदीयो जे मार्गे चाल्या छे ते मार्गे चाले तो प्रभुने पामे. वळी जे रीते आपणा गुरु आज्ञा करे ते प्रमाणे चाले तो प्रभु प्रसन्न थाय पण जो एक पोताने कर्ता मानीने चाले तो सर्व नीष्फळ थाय ते उपर द्रष्टांतः—

जेमके आपणे कोइ जातीनो स्पर्श करीए त्यारे केहे शुं के हुं छुत्राणो ? ते जो पोताने कर्ता माने छे तो एम कहेवाय छे माटे जे पोताने कर्ता माने छे तेना उपर प्रभु खीजे छे. ए रीते जे सेवा स्मरण करे छे अने कहे छे के ए में कर्युं तो ते छोवाणो जाणवो. ते पोते सर्वथी अधिक हतो तो पण पोतापणुं मान्युं त्यारे सर्व खोयुं. माटे प्रभुने पामवानां जे जे साधन छे तेना कर्ता प्रभुज छे एम मानवुं. वळी आ देह गया पछी तेनी त्रण गती थाशे. वीष्टा, क्रमी अने भस्म ए त्रण गती थाय छे माटे आ सर्व जीव काळना

भक्षकरुप छे तो पण आ जीवने हुं ने मारुं मटतुं नथी तथा संसारमां स्त्री पुत्रादिकमां आसक्ती राखे छे माटे ए तो नर्कनुं ठेकाणुं छे. माटे ज्यारे आ जीवने हुं ने मारुं मटशे, त्यारे ते प्रभुने भजशे अने भजशे तोज ते प्रभुने पामशे. वळी पोताना शरीरनुं सुख वीचारवुं नहीं. आपणो देह तो मलमूत्रनो भरेल छे एम जाणीने देह उपर प्रीती न करे सर्वना धणी तो एक प्रभुज छे. माटे एम समजवुं के हे प्रभु ! जेम तमने गमे तेम करो. केमके आ देह प्रभुनो छे. एम कपट मूकीने जाणशे तेना उपर प्रभुजी प्रसन्न थाशे तेम प्रभुजी एम कहे छे के तुं तारी सत्ता सहीत मारी शरणे आव केमके ए सत्ता कंइ तारी नथी पण ज्यारे तुं माराथी विमुख थयो त्यारे तें ते सत्ता पोतानी मानी छे तेथी तुं आसुरी थयो छुं. माटे भगवदीय तो तेने जाणवा के पोतानी सत्ता प्रभुने सोंपे. त्यारे काम थाय.

इति श्रीमद्गुलालजी महाराजकृत वचनामृत ओगणत्रीशमो संपूर्णम्.

वचनामृत १० मो.

वळी एक दीवसे नारदजीए ब्रह्माजीने पूछयुं के महाराज ! आ ब्रह्मांड मोटुं छे के भगवान मोटा छे? वळी आ ब्रह्मांडथी भगवान थया छे के भगवानथी ब्रह्मांड थयुं छे? त्यारे ब्रह्माजीए कह्युं के आ वींध्याचळ पर्वत चारसेंयोजन उंचो छे, तथा चारसेंयोजन पोहोळो छे, पण तेनुं आधी दैवीक स्वरुप नानुं छे, तेम आ जगत सर्वे ब्रह्मरुप छे, ते भगवाननुं रहेवानुं घर छे. तेमां भगवान सर्वे व्यापी रह्या छे तेम ज विंध्याचळ पर्वत छे ते घर छे अने भीतर वींध्याचळ पर्वत स्वरुपात्मक छे. ते विंध्याचळने भजशे के स्वरुपने भजशे माटे स्वरुपने भजवुं एज योग्य छे, तेम आ सर्वे जगत ब्रह्मरुप छे पण जगतने भजवुं नही केवळ भगवानना स्वरुपने भजवुं. तेम जो भगवानना स्वरुपमां मन राखे तो आ जगतने भूलाय छे केमके प्रभु वीना बीजुं कांइ छेज नही अने ज्यारे मन प्रपं-

नमां जाय छे त्यारे घणा रंगना तरंग उठे छे.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत त्रीशमो संपूर्णम्.

वचनामृत ३१ मो.

वळी एक दीवसे पूछयुं के आ जीव भगवतकथा सांभळे छे तथा भगवत्सेवा करे छे पण जीव कोरो ने कोरो देखाय छे तेने कंइ भगवदधर्म स्पर्श करतो नथी तेनुं कारण शुं ? त्यां कहे छे के आ जीव कथा सांभळे छे पण तेनो जीव कथामां लागतो नथी ज्यारे जीवनुं मन कथामां लागे त्यारे ते भगवानने गोततो फरे. ते कोनी पेठे जेमके कोइ पुरुष अन्न विना भूखे मरतो होय पछी तेने उत्तम भोजन मळे त्यारे ते घणुं सुख पामे छे तेम आ जीव कथा सांभळीने सुख पामे, श्रवणे कथा सांभळे, पछी तेना कानरुपी द्वारमां थइने तेना हृदयरुपी सींघासनमां भगवान बीराजे छे. त्यारे तेना हृदयमां काम क्रोधरुपी जे चोर छे तेने मारीने काढी

मूके छे. ते कोनी पेठे के जेम राजा बेठो होय ने चोर चोरी करे तो मार्यो जाय. पण राजा विना ते गम एटली चोरी करे तो पण कोइ पुछे नही. तेम आ जीवना हृदयमां प्रभु बीराजे त्यारे चोरने रेहवुं न बने. हवे चोर ते शुं ते कहे छे काम, क्रोध, लोभ तथा विषय वासना तथा अहंता ममता. ए सर्वे चोर छे तेमांथी मन खेंचाइ जाय ने ज्यारे कथामां एवी आसक्ति थाय त्यारे भगवान तेना हृदयमां पधारे. पण आसक्ति विना जो के हजार वरस कथा सांभळे तो पण तेने भगवद्धर्म कंइ पण स्पर्श करे नहि. ए रीते सेवा स्मरण तथा कथा कीर्तनमां आसक्ति जोइए. त्यारे एम जाणे जे मने कोइ श्रीठाकोरजीनां चरणस्पर्श करावे तो हुं सेवामां न्हाउं. त्यारे प्रभु प्रसन्न थाय. वळी सेवा स्मरण करे तथा कीर्तन करे पण मनमां जराए मोटाइ आणे नहि. त्यारे ते कृतार्थ थाय. माटे जे करवुं ते विकार रहित करवुं ते विकार तो पोतानुं

मन जीते त्यारे मटे. एम जाणीने मन भगवानमांथी बहार काढे नही. वळी काळनी गति बहु सूक्ष्म छे. घडीए घडीए तथा पलेपले चार युग वह्या जाय छे ज्यारे सत्ययुग होय त्यारे आ जीवमां सत्ययुगना धर्म वर्ते छे. सत्ययुगमां ब्राह्मण तथा वैष्णव उपर प्रीत उपजे छे. वळी कोइने कठोर वचन कहे नहि, असत्य बोले नही, वळी कोइ वातनी कामना राखे नही, एम जेटला सत्युगना धर्मो छे ते सर्वे आ जीवमां वर्ते छे. तेमां मारवुं ने मरवुं एम माने छे. द्वापरयुगमां पूजा ने अर्चनना धर्म वर्ते छे. पण आ कलीयुगमां तो श्रीकृष्णना कीर्तनवडे उद्धार थाय छे "कलौ केशव कीर्तनात्" ए रीते चारे युगमां धर्म चाल्या जाय छे तो जे जे युगना धर्म आचरशे ते ते युग प्रसिद्ध छे एम जाणवुं.

इति श्रीमट्टुलालजी महाराजकृत वचनामृत एकत्रीसमो संपूर्णम्.

वचनामृत ३२ मो.

वळी एक दिवसे ब्रह्माजीए श्रीकृष्णने पूछ्युं के हे महाराज ! तमे मने सृष्टि उत्पन्न करवानी आज्ञा आपी छे वळी तमे मारा उपर प्रसन्न थइने कहो छो के तुं माग, पण हे महाराज ! मने तमारी मायानो पार जडतो नथी अने तमे कहो छो के सृष्टिकर वळी मोटा मोटा ऋषिने कह्युं छे जे तमे सृष्टि करो एवी तमारी इच्छा छे पण हे महाराज ! तमारा स्वरूपनी कोइने खबर पडती नथी तो सृष्टि केम प्रगट करवी ? ते कहो. त्यारे भगवान कहे छे के आ जगतमां मारी मायानो पार जडतो नथी ते केम जे आ जगतमां हुं भेगो पण छुं, अने जगतथी जुदो पण छुं. ते कोइ अलौकिक द्रष्टिथी जोशे अने कोइनी साथे विरुद्ध नही करे ते मारा स्वरुपने जाणशे अने हुं पण तेनी उपर प्रसन्न थइश. माटे सर्वेना कर्ता एक हुंज छुं अने जे जीवने हुं कृपा करीने मारुं स्वरुप जणावीश ते

जाणशे ए रीते सर्वेनो कर्ता मने जाणजो. हवे ज्यारे आ जीवने पोतानुं धार्युं थातुं नथी त्यारे ते शोक करे छे अने पोतानुं धार्युं थाय छे त्यारे प्रसन्न थाय छे माटे लाभ थये हर्ष न करवो हानी थयेथी शोक न करवो तेने मारो भगवदीय जाणवो. अने मारी इच्छा विना कंइ बनतुं नथी त्यारे आ जीव हर्ष शोक करे छे ते केवळ अज्ञान जाणवुं. माटे आ जीव पोताने कर्ता मानीने बेठो छे ते छोडीने एक मनेज कर्ता माने त्यारे काम थाय. वळी आ जीव मारी सेवानो पात्र क्यारे थाय के ज्यारे आ सर्वे जगतने मारुं रुप देखे जेम आकाश सर्व जगतमां व्यापक छे तेम हुं सर्वे ब्रह्मांडमां व्यापक छुं. माटे आ प्रपंच हरीरुप जाणे त्यारे तेने हुं ने मारुं मटे अने सर्वत्र प्रभुरुप देखे केमके प्रभु विना बीजुं छेज नही अने आ सर्व जगत निर्दोष छे एम जाणे तो पछी मारी सेवाने पात्र थाय ने सेवा करशे ते मने पामशे. वळी सेवा ते फलरूप

जाणे साधनरुप जाणे नही. हवे साधन ते शुं ते कहे छे. कर्या विना चाले नही अने स्नेह विना करवुं तेनुं नाम साधन छे. अने सेवानुं फळ तो सेवाज छे. हवे सेवा ते शुं? तो कहे छे के सेवामां न्हावानो उत्साह आवे, अने सामग्री करवानो घणो उत्साह आवे, तथा ए विना (सेवा विना) बीजुं कंइ गमे नही अने ज्यारे मंदिरमां न्हाय त्यारे आनंद पामे तेनुं नाम सेवा. ए सेवा फलरुप जाणवी. वळी दंभ, काम तथा क्रोध, रहित सेवा करे. त्यां वळी पूछ्युं के दंभ ते शुं? त्यां कहे छे के लोकने जणावे छे के हुं सेवा करुं छुं. तो तेना उपर प्रभु प्रसन्न थता नथी. माटे भगवद इच्छाए जे कंइ प्राप्त थाय तेमां निर्वाह करे अने क्रोध लोभ रहित सेवा करवी ए सर्वोपर सिद्धान्त छे.

॥ इति श्रीमद्गुलालजी उपनाम श्रीगोपिकालंकारजी महाराजकृत श्रीवचनामृत द्वात्रिंशत्तमम् संपूर्णम्. ॥ ३२ ॥

श्री मट्टुलालजी महाराजे श्रीद्वारकामां छप्पनभोग कर्यो ते

समयनुं धोळ.

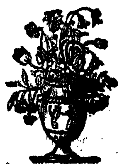
(राग-चालो वनयात्रानां सुख लइएरे.)

चालो श्रीबेटद्वारकांजी जइएरे, गोमनी रत्नसागरमा नाहीएरे; दरशन करीने पावन थइए, चालो० टेक. श्रीद्वारकांधीश मोटुं धामरे, रुडुं बेट शंखोद्धार नामरे; श्रीमट्टुलालजीए कीधां काम. चालो० १ श्रीद्वारकेश प्रभुजीने लालेरे, छप्पनभोग कीधो मारे वहालेरे, संवत ओगणीससें त्रीसनी साले. चालो० २ फागण सुदी त्रीज लख्यो रीतेरे, वेणुनाद कीधो अजीत जीतेरे; फा रवी सुद पांचम करी प्रीते. चालो० ३ खेलना दिवस घणा साराRे, वीस दीन पेहेला ओच्छव धार्या रे, अधीक सुख आप्यां वहाला मारा. चालो० ४ भइआ बंधु कुटुंब संबंधी तेड्यारे, हळीमळी अतिशय रस रेड्यारे; वल्लभीसृष्टीने लगाड्या नेडा. चालो० ५ बंदोबस्त बहु सारा कीधारे, छोटा मोटा सहुनां कारज सीधारे; नीकट

तेडी अभेदान दीधां. चालो० ६ सर्वे मंदीरोमां सुख सरखां रे, आठे पटराणी पति निरख्यां रे: श्रीवल्लभप्रभु जोइ जोइ मन हरख्यां. चालो० ७ बेठकमां श्रीमहाप्रभुजी राजेरे, शंखतळाव तीरे गाजेरे; शंखनारायण मां धुनी गाजे. चालो० ८ वेणुनाद सुणी सर्वे आव्यारे, ऋषी मुनि देवताने भाव्या रे; ताप त्रीवीधीना मटाड्या. चालो० ९ प्रथम स्नानयात्रा उत्सव कीधोरे, महा वदी त्रीजे महा सुख दीधांरे; पांचमे रथयात्रानां सुख लीधां. चालो० १० आठमे रुडा हींडोळा साज्यारे, झुलावी फूल्या श्रीवल्लभ महाराजारे; दशमे वीवाह खेल आनंद झाझा. चालो० ११ एकादशी पवित्रां धराव्यां वहालेरे, बारसे धर्यां श्रीवल्लभ वल्लभी म्हालेरे; महारस पुष्टिनां सुख आले. चालो० १२ चौदसे डोल झूलाव्या प्रीतेरे, चुवा चंदन अरगजा रस रीतेरे. अबील रंग गुलाल उडे नीत्ये. चालो० १३ फागण सुद पडवो सारोरे, दीवाळी मानी हरख्यो वहालो मारोरे, रुशनाइ हटरीमां बीराज्या

प्यारो. चालो० १४ बीजा मनोरथ वचमां कीधारे, नि·
रखी नीजजननां कारज सीध्यांरे; ख्यां ते छप्पनभोग
पछी लीधां. चालो० १५ फागण सुद पांचमे प्रीत
करीरे, मनोरथ छप्पनभोग धरीरे, श्रीवल्लभप्रभु आरो·
गावे वहालभरी. चालो० १६ भीतरथी भोग घणा
आवेरे, सखडी अनसखडी अधिक लावेरे; नागरी दुध·
धर मेवा भावे. चालो० १७ सामग्री सर्वे प्रकारे
साजीरे, भुजवणां सेकवणां शाकभाजीरे, पाक पकवान
मीठाइ झाझी. चालो० १८ संधाणां बहु विधनां धरीआंरे,
सामग्रीणां अनेक वानां करीयांरे; संक्षेपे सरवे विस्त·
रीयां. चालो० १९ गणतां घणी बुद्धि अकळाइरे, नी·
रखी सहु न्याल थया भाइरे; प्रीतेथी प्रभु भोजन करे
धाइ. चालो० २० छपनभोग आरोगे बहु देखनांरे,
नानां मोटां नरनारी लेखनांरे, दरशन बहु पंघ करे
पेखनां. चालो० २१ नवलखो मेळो थयो भारोरे, चारे
खुंटेथी सृष्टी आवी सारीरे; मनोरथ मनमां [illegible] धारी.

चालो० २२ भाव करी भेट सामग्री धरेरे, मनोरथ नीरखी फूलीने फरेरे; अन्यो अन्य प्रीत अधिक करे. चालो० २३ धुप दीप तुलसी पधराव्यां रे, गोकर्ण कुलेह धराव्यांरे; शणगार अधीक अधीक लाव्यां. चालो० २४ फूलनी माळाओ पचरंगीरे, वस्त्र आभुषण रसरंगीरे; शोभा बनी अधिक नवरंगी. चालो० २५ शीतळजळ बीडां सुगंध सारीरे, आरोगावी रस बरख्या भारी रे; दासनो दास हुं बलिहारी. चालो० २६ तत्व संख्याए पद कीधां रे, श्रीवल्लभ प्रभुए माहा सुख दीधां रे; दासनां कारज सहु सीध्यां. चालो श्रीबेट द्वारकांजी जइएरे. २७



स्वरूपदर्शन. [આવૃતિ ૩ જી.]

આ પુસ્તક શ્રીનાથજી આદિ સાત સ્વરૂપ, શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઇજી, સાતલાલજી, આદિ ઘણા પ્રાચીન અને હાલ ભૂતળ ઉપર બિરાજતા ઘણા શ્રીગોસ્વામી બાળકોના ઉત્તમોત્તમ, સુંદર દેદીપ્યમાન્, ચીત્રો મળી લગભગ ૧૦૪ સ્વરૂપના ચિત્રોનું એક સુંદર પુસ્તક યાને આલ્બમ સારા ઉંચી જાતના આર્ટપેપર ઉપર છપાવી મહાન્ ખરચે, અને અત્યન્ત પરિશ્રમે તૈયાર કરવામાં આવ્યું છે. આ પુસ્તકની પ્રથમાવૃત્તિ થયા પછી શ્રીમદ્ ગોસ્વામી **શ્રીગિરિધરલાલજી મહારાજ** શેરગઢવાળાની આજ્ઞાનુસાર ને તેમણે કરેલી સૂચના મુજબ ખૂટતાં ચિત્રો મહાન્ ખરચે તૈયાર કરાવી પોતે બતાવેલા અનુક્રમ પ્રમાણે ચીત્રો ગોઠવી તૈયાર કરવામાં આવ્યું છે. જેથી દરેક વૈષ્ણવોએ આ પુસ્તક મંગાવી તેમાં આપેલાં ચીત્રજીનાં દર્શનનો લાભ લેવા ચુકવું નહિ. આ પુસ્તક સારી રીતે સાચવી શકાય માટે તેને સુંદર, દેદીપ્યમાન, સુશોભીત છીંટનું પાકું પુઠું કરવામાં આવ્યું છે. છતાં ન્યોચ્છાવર માત્ર નહી જેવીજ ફક્ત રૂ. ૩—૦—૦ ત્રણ રૂપીઆ ગખવામાં આવી છે.

વૈષ્ણવોના નિત્ય નિયમના પાઠ તથા ધોળ.

(આવૃત્તિ ચોથી.)

આ પુસ્તકમાં શ્રીવલ્લભાખ્યાન, મુળ પુરૂષ, શ્રીયમુનાષ્ટ , ૪૦ પદ, ધોળ, ષોડશ ગ્રન્થ બધા; શ્રીસર્વોત્તમ પાઠ તથા ધોળ, શ્રીનવરત્ન ધોળ, શ્રીગોપીગીત વગેરે આપવામાં આવ્યું છે છતાં કીંમત માત્ર ૦–૪–૦ ચાર આનાજ છે.

શ્રી કાકાગિરિધરજીના, તરફથી સેવક વૈષ્ણવ કવિ
ગિરિધરદાસજી કૃત.

શ્રી ગિરિરાજ ભૂષણ ગ્રન્થ.

મુલ સહિત ગુર્જર અનુવાદ.

તથા શ્રીદ્વારકેશજી મહારાજ કૃત "શ્રીગોવર્ધનાષ્ટક" તથા "શ્રીગિરિરાજજીની નામાવલી" એ પ્રાચીન-અપ્રગટિત પુસ્તકોમાંથી કરેલું શોધન.

શ્રીપૂર્ણ પુરુષોત્તમ, શ્રીગોલોકાધિપતિ, શ્રીમન્નંદનંદન, શ્રીયશોત્સંગલાલિત, શ્રીકૃષ્ણચંદ્રે ભૂમંડળમાં પ્રગટ થઇ, શ્રીગિરિરાજજીને ધારણ કરી જેજે અદ્‌ભૂત લીલા કરી છે તે, શ્રીગિરિરાજજીનું પ્રાકટ્ય તથા તેમાં રહેલા ઉત્તમ તિર્થોનું પ્રગટ થવું, તેમજ શ્રીનાથજીનું પ્રાકટ્ય વર્ણન તથા શ્રીગિરિરાજજીનાં દરેક અંગોનું વર્ણન, શ્રીગોવર્ધન પુજાની ભાવના, (પુષ્ટિમાર્ગની મેંડ પ્રમાણે) ઇંદ્રનો કોપ નિવારણ કરવા માટે શ્રીકૃષ્ણે શ્રીગિરિરાજને ધારણ કરવાથી વ્રજવાસીઓની શ્રીકૃષ્ણ વિષે શંકા, શ્રીનંદરાયજીને જાતી બહાર કરી શ્રીવૃષભાનજી પાસે જવું. ત્યાં જઇ શ્રીકૃષ્ણની પરિક્ષા લેવા મુકતા માળા મોકલવી અનેક મોતીઓનું ઉત્પન્ન થવું; નંદગામમાં મુકતાકુંડ પ્રગટ થવાનું માહાત્મ્ય, શ્રીગોવર્ધન પુજા વખતે આવેલાં અનેક ગોપીકાઓનાં યુથનું વર્ણન. મહાપાપો કરવાથી રાક્ષસ યોનીને પામેલા એક વૈશ્યને શિલાસ્પર્શ થવાથી પ્રેતયોનીમાંથી છુટી દિવ્ય સ્વરૂપ ધારણ કરી, દ્વિજ પ્રત્યે કરેલી શ્રીગિરિરાજજીનાં તિર્થો અને સમગ્ર ભારત ભુમીના મહાન્ તિર્થોની સમાલોચના ઇત્યાદિ અનેક વિષયોનું આ ગ્રંથમાં મૂળ સહિત શુદ્ધ ગુજરાતી ભાષામાં વર્ણન કરેલું છે. તથા કેટલેક સ્થળે વ્રજના ગુપ્ત સ્થળોના વર્ણન ઇત્યાદિની ખાસ ઉપયોગી ટીપણી પણ આપી છે કે જે દરેક વૈષ્ણવે વાંચવા જેવી છે. આટલું છતાં ન્યોચ્છાવર રૂા. ૦-૧૦-૦ રાખેલ છે.

व्रजभाषाके पुस्तको.

१ कीर्तन संग्रह भाग १ लो. (वर्षोत्सवके कीर्तन) घणा मोटा अक्षरथी १०-
२ श्रीगोकुलनाथजीके २४ वचनामृत ०-
३ श्रीयमुनाष्टक मूल, श्रीयमुनाजीके ४० पद तथा धोळ ... ०-
४ श्रीवल्लभाख्यान मूलपुरुष ०-
५ श्रीवनयात्रानुं धोळ ०-
६ श्रीमद्गुर्जर महाराजके ३२ वचनामृत... ... ...
(प्राचीन पुस्तकोमेंसे कीया हुआ शोधन) ०-
७ श्रीगिरिराजभूषणे ग्रन्थ सटीक तथा श्रीगोवर्धनाष्टक तथा
श्रीगिरिराजजीनी नामावली (प्राचीन पुस्तकोमेंसे कीया हुआ शोधन) ०-१०-०
८ नित्यनियमना २४ ग्रन्थ मूल संस्कृत बडा अक्षरसें ... ०-६-०
९ श्रीवल्लभाष्टक तथा चतुःश्लोकी सटीक ० ६-०

ધી 'ગુજરાત' પ્રિન્ટીંગ પ્રેસમાં-શાહ સોમાલાલ મંગળદાસે છાપ્
પાંચકુવા-અમદાવાદ.